अंकः- द्वितीय

सितंबर-2022

वार्षिक राजभाषा हिन्दी पत्रिका

हरिहर

अमृत महोत्सव विशेषांक







कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
पूर्व मध्य रेल, हाजीपुर


RAL RAILWAY



महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय, पूर्व मध्य रेल हाजीपुर

वार्षिक राजभाषा हिंदी पत्रिका हरिहर

संरक्षक
श्री प्रवीण कुमार सिंह
महानिदेशक लेखा परीक्षा

सह संरक्षक
अजहर जमाल
निदेशक

सम्पादक
श्री बबन कुमार
हिंदी अधिकारी

सह-सम्पादक एवं प्रकाशन परामर्श
श्री सुमित कुमार
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

प्रकाशित रचनाएँ लेखकों के निजी विचार हैं एवं
अपनी रचनाओं की मौलिकता के लिए वे स्वयं उत्तरदायी हैं।

संदेश



अपार हर्ष का विषय है कि कार्यालय की वार्षिक पत्रिका 'हरिहर' का द्वितीय संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है।

हिन्दी भाषा में भारत के वे विशिष्ट सांस्कृतिक मूल्य विद्यमान है जिनकी वजह से हम पूरे विश्व में अतुलनीय एवं प्रेरणास्रोत बने हुए हैं। अपनी भाषा में मौलिक लेखन एवं कामकाज से अभिव्यक्ति बहुत ही सहज एवं सरल होती है। 'हरिहर' पत्रिका का प्रकाशन इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

कार्यालय राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार तथा इसके के संवैधानिक प्रावधानों व नीतियों के कार्यान्वयन के प्रति पूर्ण सचेत एवं जागरूक है और इस दिशा में सतत अग्रसर है। 'हरिहर' पत्रिका कार्यालय के कर्मचारियों एवं अधिकारियों की कल्पना एवं उनके विचारों की अभिव्यक्ति और उनकी रचनाशीलता को प्रोत्साहित करने का एक सफल माध्यम है। मुझे आशा ही नहीं; वरन पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका अपने इस उद्देश्य में सफल होगी।

मैं 'हरिहर' पत्रिका के प्रकाशन के लिए संपादक मंडल एवं इस पत्रिका में योगदान देने वाले समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ।

प्रवीण कुमार सिंह
महानिदेशक लेखापरीक्षा

संदेश



कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका 'हरिहर' के द्वितीय अंक के प्रकाशन के अवसर पर मैं अत्यंत प्रफुल्लित हूँ। 'हरिहर' पत्रिका के माध्यम से कार्यालय में एक ऐसे सार्थक वातावरण की संरचना होती है जहाँ कार्यालय की रचनात्मक प्रतिभाओं को अपनी रचना के माध्यम से अपने भाव अभिव्यक्त करने का अवसर प्राप्त होता है।

यह पत्रिका कार्यालय की रचनात्मक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का दर्पण है। यह न केवल कार्यालय में हिंदी के कार्यान्वयन को प्रतिविम्बित करती है, बल्कि कार्यालय के बुद्धिजीवियों को अपना रचनात्मक प्रतिभाओं को उभारनें के लिए प्रेरित भी करती है।

प्रशासनिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक आभा को समेटे हुए राजभाषा हिंदी पत्रिका 'हरिहर' के प्रकाशन में योगदान देने के लिए संपादक मंडल एवं रचनाकार अधिकारी एवं कर्मचारीगण बधाई के पात्र है। आशा हे, कि हरिहर का यह अंक अत्यंत उत्कृष्ट एवं पठनीय सिद्ध होगा।

हरिहर के वर्तमान अंक एवं आने वाले भावी अंको के लिए मेरी अशेष शुभकामनाएँ।

अजहर जमाल
निदेशक

संपादकीय

संविधान के अनुच्छेद 351 में राजभाषा हिंदी के लिए केन्द्र सरकार को निर्देशित किया गया है ''संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, इसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिदुंस्तानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द–भंडर के लिए मुख्यत : संस्कृत से और गौणत : अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करें।''

संविधान में आठवीं अनुसूची की भाषाओं एवं संस्कृत से हिंदी के शब्द भंडार के लिए शब्द लेने के निर्देश है ना कि अंग्रेजी से। इसी संवैधानिक निर्देश का पालन करते हुए अब हम सब को राजभाषा हिंदी को समृद्ध बनाने का प्रण करना चाहिए। भाषा हमारी सामूहिक संपदा है। यह एक अद्‌भूत लब्धि है। इसी से हमारा समाज बना है तथा समाज ने भाषा का संवर्द्धन किया है। भारतीय संस्कृति और सभ्यता का समूचा ज्ञान भारतीय भाषाओं में पोषित हुआ है। विचारों का जन्म और विकास मातृभाषा की गोद में ही होता है। मातृभाषा हमारी अभिव्यक्ति का स्वाभाविक माध्यम होती है। भारत में अनेक समृद्ध भाषाएँ है लेकिन अंग्रेजी भाषा से उनके स्वाभाविक विकास में अवांछनीय अवरोध उत्पन्न हो रहा है। हमें याद रखना चाहिए कि भारतीय स्वाधीनता संग्राम की भाषा हिंदी एवं अन्य क्षेत्रीय भाषाएँ ही थी। जैसे अंग्रेजों ने भारतीयों के बीच फूट डाला, वैसी ही अंग्रेजी भाषा भी हमारी भाषाओं के बीच भेदभाव की जननी बनी है। गांधी जी ने कहा था कि ''अंग्रेजी ने हिंदुस्तानी राजनीतियों के मन में घर कर लिया है। मैं इसे अपने देश और मनुष्यत्व के प्रति अपराध मानता हूँ।''

अब समय आ गया है जब हमें हिंदी को राजभाषा से आगे जनभाषा और राष्ट्रभाषा बनाने के लिए मिल–जुलकर कार्य करना होगा। आज जब हम आजादी का अमृत–महोत्सव का जश्न मना रहे है तो स्वाधीनता दिवस पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा राष्ट्रीय स्वप्न पूरा करने के लिए बताए गए पंच प्रण में से ''गुलामी की हर मानसिकता से मुक्ति'' को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए हिंदी को अंग्रेजी की जगह स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए। हिंदी के साथ ही अन्य भारतीय भाषाओं को भी शोध, विज्ञान, शिक्षा समेत सभी क्षेत्रों में अपनाना होगा। मातृभाषा के उपयोग के अभाव में हमारी संस्कृति निष्प्राण होती है। अंग्रेजी के मोह की वजह से हम अपनी संभावित क्षमताओं तथा प्रतिभाओं का बमुश्किल पांच प्रतिशत का उपयोग ही देश के विकास में कर पा रहे है। जिस दिन हम अपनी मातृभाषा के साथ हिंदी की पहुँच देश की हर व्यवस्था तक पहुँचा पाएँगे, उस दिन भारत विश्व फलक पर सूर्य की भांति चमकेगा।

पत्रिका परिवार को आपके रचनात्मक प्रतिक्रियाओं की प्रतिक्षा रहेगी।



बबन कुमार
हिंदी अधिकारी

वीर बाला सूर्या और परिमला

हमारा देश वैभवशाली तो रहा है साथ ही यह शूरवीरों की खान भी रहा है। भारत की बालाओं ने भी अपनी सूझ–बूझ से बड़–बड़े आक्रमणकारियों को धूल में मिला दिया था। उनकी गाथा सुनते ही हमारा मस्तक उनके प्रति श्रद्धा से झुक जाता है। ऐसी ही दो वीर बालाएँ थीं– सूर्या ओर परिमला। वे सिंध के राजा दाहिर की पुत्रियाँ थी।

हम राष्ट्रगाण में अपने देश की सीमाओं के नाम लेते हैं। पंजाब, सिन्धु, गुजरात, मराठा, द्राविड़, उत्कल बंग। आज हमारे देश की सीमाएँ छोटी हो गई। पूरा सिंध तथा पंजाब का आधा भाग और बंगाल प्रान्त भारत से अलग हो गया। लगभग 1300 वर्ष पूर्व की घटना है जब हमारे देश की पश्चिमी सीमाएँ गांधार तक फैली थी, जो कि आज का अफगानिस्तान है। गांधार के पश्चिम में बगदाद देश था। बगदाद का राजा खलीफा कहलाता था। खलीफा को गांधार राज्य पर आक्रमण में सफलता नहीं मिली। तब उसने 708 ई.में अपने सेनापित बुदेल के नेतृत्व में सिंध पर आक्रमण किया। सिंध के राजा ने आक्रमणकारी सेनापति बुदेल को मार डाला और खलीफा की सेना हारकर वापस भाग गई

सिंध की हार से खलीफा अपमान का घूँट पीकर रह गया। वह इस हार का बदला लेना चाहता था। उसने फिर आक्रमण करने की ठानी।

इस बार मुहम्मद बिन कासिम को सेनापति बनाया। इसकी सेना बहुत बड़ी थी। उसकी सेना में 1 लाख पैदल सेना, 6000 घुड़सवार, 3000 ऊँट तथा पत्थर बरसाने वाले तोपखाने थे। उसने देवल बन्दरगाह पर आक्रमण किया। कई दिनों तक देवल पर घेरा डालें रहा किंतु सफलता हाथ नहीं लगी। एक दिन उसको पता चला कि जब तक मंदिर का ध्वज फहराता रहेगा, तब तक देवल को कोई हर नहीं सकता। जिस दिन मंदिर का ध्वज गिर जाएगा उस दिन देवल का सर्वनाश हो जाएगा। फिर क्या था? रात्रि के अंधकार में उसने छल से मंदिर का ध्वज गिरवा दिया। अगले दिन ध्वज गिरने की अफवाह देवल में फैल गई। सैनिकों ने हथियार डाल दिए। देवल पर कासिम का सहज ही अधिकार हो गया।

देवल की जीतने के बाद मुहम्मद बिन कासिम ने 712 ई. में सिंध के राजा दाहिर पर आक्रमण किया। राजा दाहिर अत्यन्त पराक्रमी सम्राट था। उसने अपनी पूरी शक्ति से कासिम की सेना का सामना किया।

राजा दाहिर की हाथियों की सेना तो लोहे की दीवार–सी लगती थी। राजा दाहिर हाथी पर बैठकर सेना का नेतृत्व कर रहे थे। हाथी पर ही राज्य ध्वज शान से लहरा रहा था। सैनिकों को फहराता हुआ ध्वज प्रेरणा देता रहता था। अचानक एक अनहोनी घटना हो गई। राजा दाहिर का हाथी पत्थर बरसाने वाली तोप की चपेट में आकर बुरी तरह से घायल हो गया। वह चिंघाड़ता हुआ भागा। राजा दाहिर ने उसे रोकने की बहुत कोशिश की, परन्तु हाथी नहीं रूका और हाथी नदी में गिर पड़ा। राजा भी ध्वज सहित नदी में जा गिरा। दाहिर के सैनिक अपने राजा और ध्वज को न देख निराश होकर भाग खड़े हुए। राजा दाहिर नदी से निकलकर शीघ्र ही ध्वज लेकर घोड़े पर चढ़कर फिर से नेतृत्व के लिए आए परंतु तब तक देर हो चुकी थी। सेना बिखर गई थी। जीती हुई

बाजी हार में बदल गई। दाहिर ने लड़ते–लड़ते वीर गति प्राप्त की। राजा दाहिर के बाद वहाँ की रानी और दाहिर की वीर कन्याओं सूर्या और परिमला ने किले में बचे सैनिकों की कमान सँभाली। रानी ने तो लड़ते–लड़ते वीरगति पाई, परंतु सूर्या और परिमला जीवित पकड़ ली गई। मुहम्मद बिन कासिम ने सिंध की राजधानी अरोर को बुरी तरह लूटा। मुहम्मद बिन कासिम ने अपने खलीफा को प्रसन्न करने के लिए लूट का बहुत–सा कीमती सामान उपहार स्वरूप भेजा। दाहिर की दोनों कन्याओं सूर्या और परिमला को भी खलीफा के पास उपहार स्वरूप भेज दिया। सैनिकों ने सूर्या और परिमला को खलीफा के सामने उपस्थित किया। खलीफा उन्हें देखकर अति प्रसन्न हुआ। उन वीर बालाओं ने यहाँ आते–आते मुहम्मद बिन कासिम से बदला लेने की योजना बना ली थी। उसी योजना के फलस्वरूप दोनों ने खलीफा से कासिम की शिकायत की कि उसने आपके साथ विश्वासघात किया है। उन दोनो की बात सुनकर खलीफा क्रोध से आग–बबूला हो गया। खलीफा ने अपने एक अन्य सेनापति को आदेश दिया कि 'कासिम को दगा करने की सजा में मौत के घाट उतार दो। फिर उसे पशु की खाल में सिलकर मेरे सामने पेश किया जाए। आदेश का पालन हुआ। कासिम को मार डाला गया और पशु की खाल में बगदाद लाया गया। खलीफा कासिम की लाश देखकर हँस पड़ा। सूर्या और परिमला ने भी अपने देश के अपमान का बदला ले लिया। फिर दोनों हंसते–हंसते एक दूसरे को कटार भोंककर देश के लिए उत्सर्ग हो गई। इतिहास में उनका नाम अमर हो गया। ऐसा है हमारा देश और ऐसी थी वे वीरांगनाएँ। कैसा अद्‌भुत था उनका पराक्रम!



कुंदन कुमार
स.ले.प.अ. (त.)

भारतीय राष्ट्रीय ध्वज का सफरनामा

15 अगस्त, 2022 को देश की आजादी को 75 वर्ष पूरे हो रहे है। इस अवसर पर बीते एक साल यानी 15 अगस्त, 2021 से ही पूरे हिंदुस्तान मे आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अपील के तहत हर घर तिरंगा अभियान चलाया जा रहा है। गाव–गांव, शहर–शहर लोगों से अपने घरों और प्रतिष्ठानों पर तिरंगा फहराने की अपील की गई है। लेकिन इस तिरंगे के पीछे की कहानी बहुत लंबी है। बीते 116 साल में छह बार देश का झंडा बदला गया है। हालांकि, ये बदलाव अजादी मिलने तक ही हुए। इसलिए, आजादी की वर्षगांठ पर देशवासियों के लिए यह जानना बेहद जरूरी है कि हमारे राष्ट्रीय ध्वज की इस यात्रा में क्या–क्या अहम पड़ाव रहे और कब–कब, क्या–क्या बदलाव हुए। भारतीय राष्ट्रीय ध्वज मे आखिरी बदलाव 1947 में हुआ था, उस वक्त इसे तिरंगे का नाम भी दिया गया। आइए जानते हैं तिरंगे तक की सफर...

स्वातंत्र्य समर के दौर का पहला राष्ट्रीय ध्वज 1906 मे मिला। भारत की आजादी की लड़ाई जैसे–जैसे तेज होती जा रही थी, क्रांतिकारी दल अपने–अपने स्तर पर स्वतंत्र राष्ट्र की अलग पहचान के लिए अपना झंडा प्रस्तावित कर रहे थे। 1906 में देश का पहला प्रस्तावित झंडा सामने आया। जिसे 07 अगस्त, 1906 को पारसी चौक, कलकता (अब ग्रीन पार्क, कोलकाता) में फहराया गया था। इस झंडे में तीन हरे,पीले और लाल रंग की पट्टियां थीं। इसमें ऊपर की हरे रंग वाली पट्टी में आठ कमल के फूल थे, जिनका रंग सफेद था। बीच की पीली पट्टी में नीले रंग से वन्दे मातरम् लिखा हुआ था। इसके अलावा सबसे नीचे वाली लाल रंग की पट्टी में सफेद रंग से चांद और सूरज के चित्र अंकित थे।

1907 में देश का दूसरा नया झंडा प्रस्तावित हुआ। पहले ध्वज को मिले हुए एक साल ही हुआ होगा कि 1907 मे देश का दूसरा नया झंडा प्रस्तावित किया गया। पहले झंडे में कुछ बदलाव करके मैडम भीकाजी कामा और उनके कुछ क्रांतिकारी साथियों, जिन्हें निर्वासित कर दिया गया था, ने मिलकर पेरिस में भारत का नया झंडा फहराया था। यह झंडा भी देखने में काफी हद तक पहले वाले के जैसा ही था। लेकिन इसमें केसरिया, पीले और हरे रंग की तीन पट्टियां थी। बीच में वन्दे मातरम् लिखा था। वहीं, इसमें चांद और सूरज के साथ आठ सितारे भी बने थे।

तीसरी बार 1917 में नया ध्वज प्रस्तावित हुआ। अभी करीब एक दशक का ही समय बीता था कि 1917 में देश के लिए और नया झंडा प्रस्तावित किया गया। इस नए ध्वज को डॉ. एनी बेसेंट और लोकमान्य तिलक ने फहराया था। तीसरी बार में प्रस्तावित हुए इस नए झंडे में पांच लाल और चार हरे रंग की पट्टियां थीं। झंडे के अत की ओर काले रंग में त्रिकोनुमा आकृति बनी थी। वहीं, बाएं तरफ के कोने में यूनियन जैक भी था। जबकि एक चांद और तारे के साथ, इसमें सप्तऋषि को दर्शाते सात तारे भी शामिल किए गए थे।

1921 में भारत के लिए प्रस्तावित ध्वज चौथी बार बदला। चौथी बार प्रस्तावित झंडे में चरखा शामिल किया गया। करीब चार साल ही बीते होंगे कि 1921 में अखिल भारतीय कांग्रेस

कमेटी के सत्र के दौरान बेजवाड़ा (अब विजयवाड़ा) में आंध्र प्रदेश के पिंगली वैंकेया ने महात्मा गाँधी को एक झंडा दिया था, यह हरे और लाल रंगा का बना हुआ था। गांधी जी को यह पसंद आया और उन्होंने इसमें कुछ बदलाव करवाए। इन्होंने इसमे सफेद रंग की एक पट्टी और जुड़वाई थी। वहीं देश के विकास को दर्शाने के लिए बीच में चलता हुआ चरखा भी दर्शाया गया। तब कहीं जाकर उसे आजाद भारत के ध्वज के लिए स्वीकार किया गया।

एक दशक बाद 1931 में प्रस्तावित राष्ट्रीय ध्वज फिर बदला। आजाद भारत की पहचान के लिए प्रस्तावित झंडा 1931 में एक बार फिर से बदला गया। नए प्रस्तावित झंडे में सबसे ऊपर केसरिया रंग, बीच में सफेद रंग ओर आखिर में हरे रंग की पट्टी बनाई गई थी। इसमें बीच की सफेद पट्टी में छोटे आकार में पूरा चरखा भी दर्शाया गया था। सफेद पट्टी में चरखा राष्ट्र की प्रगति का प्रतीक बताया गया। इस नए झंडे को इंडियन नेशनल कांग्रेस ने आधिकारिक तौर पर अपनाया था।

आखिकार 1947 मे देश को तिरंगा मिला। तमाम प्रयासों के बाद आखिरकार जब 1947 में देश आजाद हुआ तो देश को तिरंगा झंडा मिला। 1931 मे बने झंडे को ही एक बदलाव के साथ 22 जुलाई, 1947 में संविधान सभा की बैठक मे आजाद भारत का नया राष्ट्रीय ध्वज स्वीकार किया गया। इस ध्वज में चरखे की जगह मौर्य सम्राट अशोक के धर्म चक्र को गहरे नीले रंग में दिखाया गया है। 24 तीलियों वाले चक्र को विधि का चक्र भी कहते हैं। इस ध्वज को पिंगली वैकेया ने तैयार किया था। इसमे ऊपर केसरिया, बीच में सफेद और नीचे हरे रंग की पट्टी है। तीनों समानुपात में है। इसकी लंबाई–चौड़ाई दो गुणा तीन है।

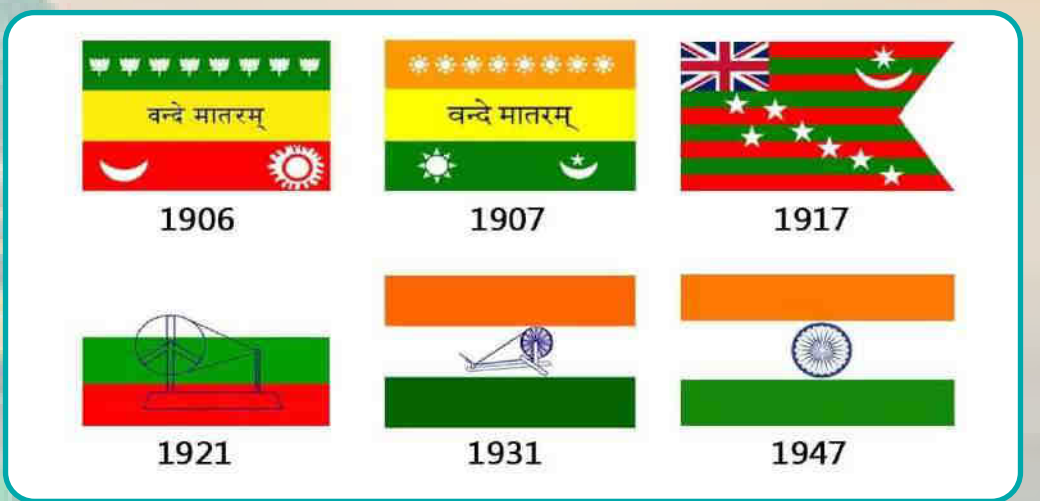



प्रत्युष कश्यप
पुत्र–बबन कुमार
हिंदी अधिकारी

आह समोसा, वाह समोसा

ब्रह्माण्ड के किसी भी हलवाई की दुकान पर दो चीजें होना जरूरी है वर्ना वह दुकान हलवाई की दुकान नहीं कहलाती....

पहला तो हलवाई खुद और दूसरा समोसा!

संसार की एकमात्र ऐसी रचना जिसके तीन कोने होने के बावजूद भी शान से सीना तान कर खड़ा हो जाता है।
हलवाई की दुकान पर जब समोसे भर कर रखे जाते है तो तले जाने से पहले पूरी समोसा मंडली पंक्तिबद्ध रूप से यूँ ट्रे मे खड़े दिखती हैं मानो सफेद वर्दी पहने जवान सावधान की मुद्रा में खड़े होकर गार्ड ऑफ ऑनर दे रहे हों।

अपने इसी शाही अन्दाज के कारण सैकड़ों वर्षो से समोसा स्नैक फूड का अघोषित सम्राट है और अपनी दो महारानियों यानी कि हरी चटनी और लाल चटनी के साथ हम सबों के दिलों में राज करता है।

अमीर–गरीब में फर्क नहीं करता। एयरपोर्ट लाउंज की फैंसी लुटेरी कॉफी शॉप में ''टू समोसा फॉर टू हंड्रेड फिफ्टी रूपीज'' में भी मिलता है और सड़कों और चौराहों के किनारे टीन के पतरे को लोहे की तार के साथ बिजली के पुराने खम्भे के साथ बाँध कर बनायी गई टपरी पर ''दस के दो'' भी मिलता है। ताज होटल की चाँदी की प्लेट में भी परोसा जाता है और पुल के नीचे वाले ठेले पर अखबार मे लिपट हुआ भी मिलता है । मतलब कुल मिला कर बड़े वाले सेठ जी ओर सेठजी के घर का नौकर दोनों बराबर स्वाद लेते है।

सड़क के किनारे किसी ठेले पर छोले और चटनी के साथ स्वाद लेते हुए किसी नयी जॉब पर लगे हुए कूरियर कम्पनी के डिलीवरी बॉय के फोन पर जब कॉल आती है और वो सामने से रिप्लाई करता है कि ''मैं लंच कर रहा हूँ'' तो कसम से समोसे को इतना प्राउड फील होता होगा कि उसके अंदर के आलू ''अजीमो शान शहंशाह'' वाल बैग्राउंड म्यूजिक के उपर नाचने लगते होंगे। बस यूं समझिये कि जहाँ कुछ भी खाने का नहीं मिलता वहां पर भी समोसा हमेशा प्राणरक्षक का काम करता है।

जिस प्रकार मनुष्य के जीवन में मौत और दुकान में ग्राहक के आने का कोई निश्चित समय नहीं होता। ठीक ऐसे ही समोसा खाने का भी कोई निश्चित समय नहीं है। पूरे हिंदुस्तान मे ही नहीं विश्व के कई देशों में सुबह – सुबह नाश्ते मे खाया जाता है। देशभर की फैक्टिरियों, कम्पनियों की कैंटिन में तो दिन भर खाया जाता है। स्कूल कॉलेजो की कैंटीन में अनगिनत बनती बिगड़ती

प्रेम कहानियों का गवाह बना है। इन कैंटीनों की कड़ाही में दिन भर निरंतर उत्पादन होता ही रहता है !

मजदुरों को ओवरटाइम का पैसा भले ही बीस रूपए कम दे दो पर बीच में एक ब्रेक लेकर चाय के साथ दो समोसा खिला दो फिर देखो कैसे सारे काम तुफानी रफ्तार से निपटाते है।

समोसा, कहीं मैश किए हुए आलू से भरा जाता है तो कहीं कटे हुए चौकोर आलुओं से। देश भर में कहीं भी किसी स्कूल मे निरीक्षक आ जाए, किसी कम्पनी में ऑडिटर आ जाएँ, दुकान पर कोई पुराना ग्राहक खरीदारी करने आ जाए तो ट्रे में चाय के कप के साथ समोसा होना उतना ही स्वाभाविक है जितनी कि सेटमैक्स पर बार बार सूर्यवंशम का आना। फिर चाहे चाय के साथ चिप्स, बिस्किट, भुजिया, कुछ भी हो पर अतिथि के लिए ''अरे! एक समोसा तो लीजिए'' का आग्रह सम्बोधन एक सम्मान सूचक वाक्य माना जाता है।

भारत के राष्ट्रीय स्नैक की पद के लिए चाहे तो कोई सर्वे करवा लीजिए चाहे वोटिंग, मेरा दावा है कि इस पद पर समोसे का चुनाव होने 100% पक्का है। यह मैं नहीं कर रहा हूँ बल्कि विश्व भर में समोसे के करोड़ों चाहने वाले कह रहे हैं!





बबन कुमार
हिंदी अधिकारी

भारत के अनमोल रतन–मेजर ध्यानचंद

यूरोप के देश ऑस्ट्रिया की राजधानी विएना के स्पोर्टस क्लब में एक इंसान की चार हाथ वाली मूर्ति लगी है और उनके हर हाथ में हॉकी स्टिक है। उससे भी अधिक अद्‌भुत बात यह है कि यह ऑस्ट्रिया का हॉकी खिलाड़ी नहीं है, यह मूर्ति है भारत के महान सपूत मेजर ध्यानचंद सिहं की। हॉकी में उनकी जादूगरी को सलाम करती है यह मूर्ति। अब क्रिकेट के महानतम बल्लेबाज सर डॉन ब्रेडमैन को भी सुन लीजिए। मेजर ध्यानचंद का मैच देखने के बाद दांतो तले अंगुली दबा लेने वाले ब्रेडमैन ने कहा था, 'जैसे हम क्रिकेट में रन बनाते है, वैसे ध्यानचंद हॉकी में गोल करते है। तीसरा वाकया जिस तानाशाह का उस समय विश्व में दबदबा था, खौफ था, वह एडोल्फ हिटलर अपने ताकतवर देश जर्मनी की हॉकी टीम को भारत के हाथों बुरी तरह पिटते देखने के बावजूद मेजर ध्यानचंद के खेल का मुरीद हो गया। हिटलर ने जर्मनी के लिए खेलने पर ध्यानचंद का कर्नल बनाने का प्रस्ताव तक दिया था, जिसे उन्होंने सहजता से ठुकरा दिया था।

भारतीय सेना ने कैसे ध्यानचंद को सम्मान दिया, जरा यह भी देख लीजिए। 16 साल के युवा को बेहद योग्य मेजर ध्यानचंद बनाने वाले सेना के सूबेदार मेजर तिवारी थे। 1922 में सेना में आए ध्यानचंद को 1927 में लांस नायक, 1932 में नायक, 1937 सूबेदार 1943 में लेफ्टिनेंट, 1948 में कप्तान और बाद में मेजर बनाया गया।

मेजर साहब के अप्रतिम खेल कौशल को पूरी दुनिया द्वारा सलाम करने के वाकये अनगिणत है। विदेश मे मेजर ध्यानचंद का मान–सम्मान किया जाता था, लेकिन अभी दद्‌दा के नाम प्रसिद्ध इस हॉकी के जादूगर को भारत रत्न दिया जाना बाकी है। यह वह समय था, जब देश में सबसे लोकप्रिय खेल होने के बावजूद भारतीय हॉकी महासंघ वर्ष 1932 में हुए ओलंपिक खेलों में शामिल होने के लिए पैसों का इंतजाम नहीं हो पा रहा था। इसलिए आई.एच.एफ ने महात्मा गाँधी से मदद मांगने को सोची। महासंघ का मानना था कि बापू अगर अपील कर देंगे तो देश में हॉकी टीम की मदद के लिए सैकड़ों लोग खड़े हो जाएंगे। गाँधी जी उस समय शिमला में लॉर्ड इरविन से बातचीत कर रहे थे। आई.एच.एफ ने वरिष्ठ पत्रकार चार्ल्स न्यूमन को उनके पास भेजा। गाँधी जी ने न्यूमन से ही पूछ लिया कि यह हॉकी क्या होती है। ऐसा नहीं है कि महात्मा गाँधी को खेलों में रूचि नहीं थी। न्यूयॉर्क टाईम्स की एक रिपोर्ट के अनुसार गाँधी जी को फुटबॉल बहुत पसंद था। कहा जाता है। कि दक्षिण अफ्रिका में उन्होंने फुटबॉल एसोसिएशन की मदद की थी। इंडियन हॉकी और ददृढ़ा को शायद पहचान नहीं सके। बस हॉकी महासंघ समझ गया कि मदद की आस बेकार है। जबकि 1928 में टीम चंदा करके ओलंपिक एम्सटर्डम खेलने गई और सोना लेकर लौटी थी। फिर भी वही हाल था। अखिरकार हॉकी महासंघ ने बैंक से कर्ज लिया और टीम ओलंपिक खेलने लॉस एंसिल्स गई, स्वर्ण जीता और देश को खुश होने का मौका दिया। हालांकि वहां से लौटने का टिकट नहीं हो पाया था, जिस कारण टीम को यूरोप में मैच खेलकर पैसे जुटाने पड़े ताकि वापसी का टिकट खरीद सकें।

आज हम ओलंपिक में हॉकी के स्वर्णिम काल को याद कर प्रफुल्लित और गौरवान्वित होते है, लेकिन उस काल के महानायक को अब तक भारत रत्न नहीं मान पाए हैं। 29 अगस्त को हम

मेजर ध्यानचंद की जयंती पर खेल दिवस तो मनाते है, लेकिन भारत के माथे पर अपने बूते तीन ओलंपिक स्वर्ण पदक (1928 ,1932 और 1936) से तिलक लगाने वाले इस चमत्कारी खिलाड़ी का न सही मायने में सम्मान कर सके , न वह स्थान दे सकें जो उन्हें मिलना चाहिए।

क्रिकेट मे सर डॉन ब्रैडमैन, फुटबॉल में पेले और मुक्केबाजी में मुहम्मद अली का जो मान–सम्मान है, वही मेजर ध्यानचंद का भी होना चाहिए। यह बात खलती है कि जिस हस्ती को 1956 में देश के प्रथम राष्ट्रपति के हाथों पद्मभूषण मिल गया हो, वह अभी तक भारत रत्न के इंतजार में है। जिनके बारे में देश के पहले प्रधानमंत्री पं0 जवाहर लाल नेहरू ने कहा हो कि अपने सीने पर लटक रहे मेडल में से एक मुझे दे दे तो मैं भी गर्व का अनुभव कर सकूँ। उन्हीं मेजर ध्यानचंद को तब की सरकारों ने भारत रत्न नहीं दिया। यह दौर बाद में भी चला। मनमोहन सरकार ने 2011 में 82 सांसदों की मेजर ध्यानचंद को भारत रत्न देने की माँग ठुकरा दी थी। सचिन तेंदुलकर को 15 नवंबर 2013 मे क्रिकेट से संयास लेने के बाद उसी मनमोहन सरकार ने महज 24 घंटे मे मानदंड बदलकर भारत रत्न देने की औपचारिकता पूरी कर ली थी। दद्दा आज तक अपनी हॉकी स्टिक के साथ इंतजार कर रहे हैं।

अब मोदी सरकार ने एक बड़ा कदम उठाया है। राजीव गाँधी खेल रत्न का नाम मेजर ध्यानचंद के नाम पर कर दिया है। उम्मीद है कि जल्द ही देश के करोड़ो हॉकी प्रेमियों व देशवासियों की यह ख्वाहिश पूरी होगी कि मेजर ध्यानचंद भी भारत रत्न से सुशोभित हों!





कुंदन कुमार
लिपिक

अग्निपथ

यह हम भली भाँति जानते है कि युवा देश के भविष्य है लेकिन उनके भविष्य का क्या? जब देश के युवाओं का भविष्य ही सुरक्षित नहीं है तो देश का भविष्य बनाने का क्या मतलब ? एक अच्छा भविष्य अच्छे रोजगार के साथ ही आता है।

हर किसी को अपने सपनों और जीवन की सुख सुविधाओं को पूरा करने के लिए एक अच्छा नौकरी की आवश्यकता होती है। समय के साथ नौकरी के अवसर कम होते जा रहे है और बेरोजगारी का स्तर अपने चरम पर है। आज भारत में लाखों की संख्या में छात्र–छात्राएं बेरोजगार है और नौकरी की तलाश में है इस दौरान अग्निपथ पथ स्कीम भारत के बेरोजगार युवाओं के लिए निश्चित ही एक अच्छी खबर है।

अग्निपथ योजना मई 2022 को केन्द्रीय मंत्रीमंडल द्वारा पारित की गई योजना है। इसके बाद भारत सरकार द्वारा 14 जून 2022 को अग्निपथ योजना की घोषण की गई। इसके तहत युवाओं को भारतीय सशस्त्र बलों के लिए भर्ती किया जायेगा। इन्हे इनकी योग्यता के अनुसार चुना जा सकता है। इस योजना का उद्देश्य भारतीय सेना को अधिक से अधिक युवा चेहरा देना है। इस योजना के अंतर्गत हर साल करीब 46,000 युवाओं को भर्ती किया जाएगा। हालांकि केवल 17.5 से 21 वर्ष के आयु के युवा ही इस योजना के अंतर्गत आवेदन कर पायेंगे।

इस योजना के लिए चुने गए सैनिकों को एक विशेष नाम दिया जायेगा जिसे 'अग्निवीर' के नाम से जाना जायेगा। अग्निवीरों को सेवा अवधि 6 माह के प्रशिक्षण के साथ केवल 4 वर्ष ही होगी। 4 साल बाद, केवल 25 प्रतिशत सैनिकों को उनके प्रदर्शन के आधार पर स्थायी रखा जायेगा। जबकि अन्य को उनके सेवा निधि के साथ घर भेज दिया जायेगा।

इस योजना के तहत अग्निवीरों को कई लाभ मिलेंगे। सेवा के पहले वर्ष में युवाओं को उनके वेतन के रूप में 30,000रु प्रति माह दिया जायेगा जिसे बाद में सेवा के अंत तक बढ़कर 40,000 कर दिया जायेगा। हालांकि वेतन का केवल 70% ही हाथ में दिया जाएगा शेष 30% ''सेवा निधि'' पैकेज के लिए काटा जायगा। यह पैकेज टैक्स फ्री रहेगा।

चार साल की सेवा के बाद अग्निवीरों को 11.71 लाख का ''सेवा निधि'' पैकेज दिया जायेगा। यह उनके काटे गए वेतन के साथ–साथ सरकार द्वारा दिए गए ब्याज सहित समान योगदान का योग है। चार साल की सेवा के दौरान अग्निवीरों को 48 लाख का जीवन बीमा प्रदान किया जायेगा और मृत्यु हो जाने पर परिवार को 1 करोड़ दिया जायेगा। वित्तीय लाभों के अलावा युवा अनुशासन, शारीरिक फिटनेस, टीम वर्क आदि जैसे कौशल उत्पन्न कर सकते है। उन्हें उनके प्रशिक्षण के प्रमाण पत्र से सम्मानित किया जाएगा जो भविष्य के अन्य पहलुओं में सहायक होगा।

देश के लोग इस योजना को खुशी–खुशी स्वीकार नहीं कर रहे हैं और इसका विरोध भी किए। बिहार, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, झारखण्ड अादि कई राज्यों में छात्र इस योजना के खिलाफ हिंसक विरोध प्रदर्शन किए थे इस योजना की आयु सीमा एवं अन्य सेवा अवधि से युवा असंतुष्ट है। हालांकि सरकार ने उम्र सीमा बढ़ाकर 23 वर्ष करने का फैसला किया

है, लेकिन मौजूदा विरोध में कोई फर्क नहीं आया। कई इलाकों में छात्रों ने ट्रेन जला दी और सरकारी सपंत्तियों को नुकसान भी पहुँचाया। अब युवा सरकार के इस योजना को वापस लेने की मांग कर रहें हैं।

इस नई प्रस्तावित योजना की घोषणा के बाद भारत में लोगों ने अपने विचार और राय प्रकट करना शुरू कर दिया था, कई लोग इस योजना की सराहना कर रहे हैं जबकि अन्य लोग बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन। पूरे भारत में कई हिंसक विरोध प्रदर्शनों की खबरे आई। पर युवाओं को अपने कैरियर से फिर से समझौता करना पड़ा और सरकार के इस फैसले को मानना पड़ा।

मुझे आशा है कि अग्निपथ योजना पर मेरा विवरण आपके लिए सहायक होगा।





धन्यवाद।

राकेश कुमार

सहायक

सावधान मेरे मित्र से

मेरे हैं एक अनोखे मित्र
कहते–गंगा समान पवित्र है उनका चरित्र।
लोगों से कहते–वह सदा चाहते मेरी भलाई
कष्ट में मुझे देख आती उन्हे रूलाई।।

कसमें खाते हाथ में रखकर गीता,
मुझसे दूर रहकर दिखते, जैसे अशोक वाटिका में सीता
हर दम मेरा हाल जानने, रहते सदैव अधीर,
सबके सामने बोलते–मेरी अच्छी हो तकदीर।
मैं दंग रह गया जब लोगों से जाना अपने मित्र का असली रूप
लगा–जैसे दुनिया में कोई नही उनसा कुरूप
मै समझ गया वो हैं मीठा जहर,
मेरे नुकसान को सोचते आठो पहर।।
जब भी मैं आगे बढ़ा, तबीयत हो गई उनकी सुस्त,
मेरे सफलता का समाचार सुन, वह रहने लगे नाखुश।
मेरे असफलता पर उनके घर गूंज उठी शहनाई।
साथियों संग बैठकर उन्होंने खाई खूब मिठाई।।
सब कुछ जानकर भी मैंने कभी नहीं किया उनका अपमान,
ईश्वर से सदा चाहा उनकी सलामती का वरदान।
मेरी शुभेच्छा है वह बनें एक अच्छा इंसान,
मित्रता को पवित्र बनाएं, और बनें महान।

मित्र भी रहें और शत्रु भी,
ऐसे नामुरादों से सावधान रहना जी।
इस दुनिया का चलन अजीब,
थोड़ा कहना, बहुत समझना जी।।



सुरेंद्र कुमार
स.ले.प.अ.

मेहनत और लगन

जिन लागों मे होती है मेहनत और लगन की भावना
वो लोग करते हैं पवित्र मन से साधना।
उनके लिए असंभव नही है समुद्र को लाँघना।
मेहनत और लगन लाती है सफलता
इससे जी चुराने वाले को मिलती है विफलता।
मेहनत और लगन से इंसान बन जाता महान।
उनके बताए मार्ग का अनुसरण करता सारा जहान।
मेहनतकश इंसानों को मानव समाज देता है आदर
कामचोरों का करते सभी निरादर।
लगनशील वैज्ञानिकों की पहुँच मे है चाँद और तारे ।
अपने उपलब्धियों के बल पर वे बन जाते सबके प्यारे।
मेहनत और लगन से जिन्होंने लड़ा स्वतंत्रता संग्राम,
पराधीन भारत में लाया स्वतंत्रता का नया विहान।
मेहनतकश लोगों के बन पर देश की हो रही तरक्की।
इन लोगों पर ही टिकी, भविष्य में देश की उन्नति।
आओ, हम मिलकर करें मेहनत और लगन की जय जयकार
अपने देश भारत के पूरें करें सारे सपने साकार,
पूरे देश में बहे विकास व भाईचारे की बहार।
भारत की शक्ति का लोहा माने सारा संसार।
कर न सके भारत की शक्ति का कोई प्रतिकार।
सफलता के रंग में रंग जाए मेहनतकशों के सारे कार्य व्यापार।
आओ फिर एक बार फिर से करें मेहनत और लगन की जय–जयकार।



सुरेंद्र कुमार
स.ले.प.अ.

सुभद्रा कुमारी चौहान–एक परिचय

सुभद्रा कुमारी चौहान ने जीवन संघर्ष और यातनाओं को अपनी रचनाओं के जरिए जन–जन तक पहुँचाकर नवयुवकों में चेतना का विकास किया। कविता और कहानी के जरिए आजादी की अलख जगाई। उनकी कविताओं ने आजादी के लिए चल रहे संघर्ष को तेज करने की भूमिका का निर्वहन किया। आजादी के पहले संग्राम को वर्तमान पीढ़ी जिन वर्ग कविताओं के जरिए याद रखती है, उसमे 'झांसी की रानी' का नाम सबसे पहले आता है। यह कविता का ही तेज था कि बुंदेलखंड से निकलकर 'झांसी की रानी' की गूंज दूर–दूर तक पहुँची।

कालजयी कविताओं की महान रचयिता कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म प्रयागराज (पूर्ववर्ती इलाहाबाद) के निहालपुर गाँव में 16 अगस्त 1904 (नागपंचमी के दिन ठाकुर रामनाथ सिंह के घर में हुआ था। उन्हे बचपन से हीं कविता लिखने का शौक था। प्रसिद्ध लेखिका महादेवी वर्मा प्रयाग में उनकी सहपाठी थी। दोनों ने ही आगे चलकर खुब प्रसिद्धि प्राप्त की। उन दिनों इलाहाबाद आंदोलन की अग्रणी भूमिका मे था। उन्होंने राष्ट्रप्रेम और आजादी की लड़ाई में साहित्य के माध्यम से अलख जगायी। उनका राष्ट्रीय भावना से युक्त कविताओं मे भारतीय इतिहास व संस्कृति की गहरी छाप मिलती है। वह उपदेश देने के बजाय स्वयं में कुछ कर गुजरने का जज्बा लेकर पैदा हुई और जीवनभर उसी के अनुरूप काम किया। इनके पिता ठाकुर रामनाथ सिंह साहित्य प्रेमी थे। इसी से उनका बचपन से साहित्य के प्रति झुकाव रहा।

जब वह छह वर्ष की थी, उसी दौरान गाँव के भड़भूज की पत्नी उनके घर आई। वह उनकी माँ से अपना दुखड़ा रो रही थी। सुभद्रा जी की माँ उस समय रसोई में थी। वह वहीं से उस भड़भूज वाली को हिदायत देते हुए बोली 'चौखट को मत छूना, दूर से ही बात करो।' अस्पृश्यता से सुभद्रा कुमारी का यह प्रथम परिचय था और जो उन्हें रास नहीं आया। उन्होंने माँ से खूब बहस की। जब माँ नहीं सहमत हुई तब उन्होंने कहा कि 'माँ तब तुम धरती के भी दो टुकड़े कर दो, जिससे स्पर्श करने व न करने वाले लोग अलग–अलग रहें।' उनकी इस बात ने उनकी माँ को अंदर से हिला दिया था। इसके बाद उनके विचारों में परिवर्त्तन आने लगा। नौ वर्ष की उम्र में ही 'नीम' नामक रचना कर अपनी नींव का अहसास साहित्य जगत को करा दिया था। वहीं से उनकी साहित्यिक यात्रा को नींव पड़ी। प्रयागराज के बैरहना स्थित क्रास्थवेट गर्ल्स स्कूल में पढ़ाई के लिए दाखिल लिया, लेकिन कक्षा नौ तक ही पढ़ाई कर पाई थी।

15 वर्ष की अवस्था में ठाकुर लक्षमण सिंह से विवाह के बाद वह जबलपुर आ गयी। प्रयाग सदा से ही हिंदी साहित्य का गढ़ तथा कई प्रसिद्ध साहियकारों की कर्मभूमि रहा है। जबलपुर भी मध्य भारत की संस्कारधानी कहा जाता है। उनके व्यक्तिव में इन दोनो स्थानों की सुगंध आसानी से महसूस की जा सकती है।

ठाकुर लक्ष्मण सिहं स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय थे। वे कविता भी लिखते थे, पर उनका काव्य कौशल देखकर उन्होंने सुभद्रा जी को उच्च शिक्षा प्राप्त करने और सार्वजनिक जीवन में

आने को प्रेरित किया। उन दिनों महिलाएँ प्राय: पर्दा करती थी, पर पति से प्रोत्साहन पाकर सुभद्रा जी ने इसे छोड़ दिया।

1921 के असहयोग आंदोलन के समय लक्ष्मण सिंह जबलपुर में अग्रिम पंक्ति में रहकर कार्य कर रहे थे। सुभद्रा जी भी पति के साथ आंदोलन में कुद गयी और जेल भी गयी। मध्य भारत में जेल जाने वाली वे पहली महिला थी। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भी वे सहर्ष जेल गयी। घर में छोटे बच्चे को छोड़कर जेल जाना आसान नहीं था, पर वे कहती थी, कि मै क्षत्राणी हूँ, अत: ब्रिटिश सरकार से टक्कर लेना मेरा धर्म है।

जोश जगाती कविता : सुमद्रा जी के मन में झाँसी की रानी के प्रति बहुत श्रृद्धा थी। वे उन्हें अपना आदर्श मानती थी। अपनी कविता –झांसी की रानी' में उन्होंने लिखा–

बुंदेले हर बोलो के मुँह हमने सुनी कहानी थीं
खूब लड़ी मर्दनी वो तो झांसी वाली रानी थी।

यह ऐसी कविता थी जिसने हर वर्ग के लोगों के हृदय को छू लिया और हर भारतीय के अंदर राष्ट्रभक्ति की ऊर्जा का संचार होने लगा। इस कविता को गाते–गाते न जाने कितने क्रांतिकारी देश के लिए बलिदान हो गए। इसके जरिये साहित्य के क्षेत्र में उनकी अद्वितीय छाप पड़ी। देखते ही देखते चुनिंदा रचनाकारों में उनकी गिनती होने लगी।

इतिहास और संस्कृति की छाप :– सुभद्रा कुमारी चौहान की भाषा की सादगी उनकी सबसे बड़ी सिद्धि है। उनकी राष्ट्रीय भावना से युक्त कविताओं में भारतीय इतिहास एवं संस्कृतिकी गहरी छाप मिलती है। देश के प्रति उनके प्रेम और समर्पण की झलक कविता 'स्वदेश के प्रति' में स्पष्ट देखने को मिलती है, जिससे वे लिखती है–

आ, स्वतंत्र प्यारे स्वदेश आ,
स्वागत करती हूँ तेरा
तुझे देखकर आज हो रहा,
दूना प्रमुदित मन मेरा।

जीवन का संघर्ष :– पति–पत्नी जाति, प्रांत और ऊँच–नीच के भेदभाव से मुक्त थे। उनका घर सबके लिए खुला था। उनके सभी परिचित रसोई में एक साथ बैठकर खाना खाते थे। सुभद्रा कुमारी ढ़ोंग व आंडबरों से दूर थी। इसका प्रमाण उन्होंने बेटी का विवाह करके दिया। जब उनके पति जेल में थे, उसी दौरान अपनी पुत्री के विवाह की पूरी जिम्मेदारी उठाई। उनकी पुत्री सुधा चौहान का विवाह प्रेमचंद के छोटे पुत्र अमृत राय से हुआ था। यह अंतरजातीय विवाह था। उस दौर में ऐसा करना चुनौतीपूर्ण था। बेटी का अंतरजातीय विवाह करने के साथ छुआछूत को लेकर समाज मे फैली भ्रांतियों व रूढ़िवादिता को खत्म करने के लिए वह जीवन भर संघर्षरत रही।

बनीं आंदोलन का हिस्साः– सुभद्रा कुमारी चौहान राष्ट्रीय भावना से ओत प्रोत थी। विवाह के एक वर्ष बाद ही पति के साथ महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में कूद पड़ी। असहयोग आंदोलन में भाग लेते हुए वे (सन् 1923 एवं सन् 1941) जेल भी गई। जब पहली बार जेल गयी तब उनके बच्चे बहुत छोटे थे। दूसरी बार पति–पत्नी दोनों को तीन वर्ष की सजा हुई। सुभद्रा जी अस्वस्थ होने के कारण 10 महीने बाद जेल से छोड़ दी गयी, लेकिन तब तक हर महिला के अंदर राष्ट्रीयता की भावना जागृत हो चुकी थी और महिलाऐं भी पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिला कर स्वतंत्रता आंदोलन का हिस्सा बनने लगी।

संवेदना की अभिव्यक्तिः– 19 वीं सदी की शुरूआत में भारतीयों में विविधता बहुत अधिक थी। पर्दा प्रथा, लड़कियों को ज्यादा पढ़ाई न कराना जैसी बंदिशों के चलते महिलाओं की स्थिति असहज थी। उन्होंने अपनी रचनाओं में महिलाओं के दर्द व संवेदना को जीवंतता के साथ व्यक्त किया। कहानी संग्रह 'बिखरे मोती' के जरिए सामाजिक चेतना जाग्रत की। बिखरे मोती में उन्होंने लिखा–

''हृदय के टुटने पर आँसू निकलते है, जैसे सीप के फुटने पर मोती। हृदय जानता हे कि उसने स्वयं पिघलकर उन आंसुओं को ढ़ाला है। अतः वे सच्चे है, किंतु उनका मूल्य तो कोई प्रेमी ही बतला सकता है। उसी प्रकार सीप केवल इतना जानती कि वह मूल्यहीन है, अथवा बहुमूल्य। उसका मूल्य तो रत्नपारखी ही बता सकता है। मैं भूखे को भोजन खिलाना और प्यासे को पानी पिलाना अपना परम धर्म समझती हूँ। ईश्वर के बनाए नियमों को मानती हूँ....।।''

सामाजिकता की पक्षधरः– सुभद्रा जी ने अपनी कविताओं से भारतीय संस्कृति की अध्यात्मिक चेतना को खूबसूरती से उभारा है। वह सामाजिक समानता की प्रबल पक्षधर थी। आम व खास व्यक्ति की खाई उन्हें पसंद नहीं थी। मंदिरों में गरीब व अमीर व्यक्ति के बीच खिंची खाई को महसूस किया। गरीब व्यक्ति की पैरोकारी करते हुए उन्होंने लिखा–

''देव! तुम्हारी कई उपासक कई ढंग से आते हैं।
सेवा में बहुमूल्य भेंट वे कई रंग की लाते हैं।।
धूमधाम से साज–बाज से वे मंदिर में आते हैं ।
मुक्तामणि बहुमूल्य वस्तुऐं लाकर तुम्हें चढ़ाते हैं।।
मैं ही हूँ गरीबिनी ऐसी जो कुछ साथ नहीं लाई।
फिर भी साहस कर मंदिर में पूजा करने चली आयी।।

स्वाधीनता प्राप्त के बाद वह मध्य प्रदेश विधानसभा तथा राज्य शिक्षा समिति की सदस्य बनी। 15 फरवरी, 1948 को बसंत पचमी के दिन कार द्वारा नागपुर से वापस आ रही थी। नागपुर–जबलपुर राजमार्ग पर कलबोड़ी गाँव के पास अचानक कुछ मुर्गी के बच्चे कार के सामने आ गये। यह देखकर सुभद्रा जी मातृ हृदय विचलित हो उठा। वह जोर से बोली– ''भैया इन्हे बचाना।

इस आवाज से चालक चौंक गया और कार एक बड़े पेड़ से टकरा गयी। यह दुर्घटना इतनी भीषण थी कि उनका वहीं प्राणांत हो गया। सुभद्रा जी की एक प्रसिद्ध कविता है,

''वीरो का कैसा हो बसंत
भूषण अथवा कवि चंद नहीं
बिजली भर दे वह छंद नहीं
है कलम बंधी स्वच्छंद नहीं
फिर हमे बताएं कौन है तो
विरों का कैसा हो बसंत।''

इसके भाव के अनुरूप ही लोगों मे अलख जगाते हुए बसंत पंचमी के पवित्र दिन कर्मक्षेत्र में ही अपने प्राण त्याग दिए।

सुभद्रा जी के दो कविता संग्रह–'मुकुल' और 'त्रिघारा' तथा तीन कहानी संग्रह–'बिखरे मोती', 'उन्मादिनी' तथा 'सीधे सादे चित्र' छपे है। उनकी पुत्री सुधा चौहान ने उनकी जीवनी 'मिला तेज से तेज' प्रकाशित की है। भारतीय तट रक्षक सेना ने 28 अप्रैल, 2006 को एक जहाज को उनका नाम दिया। 16 अगस्त, 1976 को उनपर 25 पैसे का डाक टिकट भी जारी किया गया।

आज जब हम आजादी के 75 वर्ष पूरे होने पर अमृत महोत्सव मना रहे हैं तो उनकी कविताएँ आज भी देश प्रेम की ज्वाला जगा रही है।

''हल्दी घाटी के शिला खण्ड
दुर्ग सिंहगह के प्रचंड
राणा ताना का कर घमंड
दो जगा आज स्मृतियाँ ज्वलंत....।



बबन कुमार
हिन्दी अधिकारी

कविता

मैं रहूँ या न रहूँ मेरा पता रह जाएगा
शाख पर यदि एक भी पत्ता हरा रह जाएगा।
बो रहा हूँ बीज कुछ संवेदनाओं के यहाँ खुश्बुओ का
इक अनोखा सिलसिला रह जाएगा ।
अपने गीतों की सियासत की जुबां से दूर
रख पँखुरी के वृक्ष में काँटा गड़ा रह जाएगा।
मै भी दरिया हूँ मगर सागर मेरी मंजिल नही
मै भी सागर हो गया तो मेरा क्या रह जाएगा।
कल बिखर जाऊँगा हरसू,
मैं भी शबनम की तरह किरणें चुन लेंगी मुझे,
जग खोजता रह जाएगा।
ख्वाबों का रंगीन होना गुनाह है,
इंसान का जहीन होना गुनाह है।
कायरता समझते हैं लोग मधुरता को,
जुबान का शालीन होना गुनाह है।
खुद की ही लग जाती है नजर,
हसरतों का हसीन होना गुनाह है।
लोग इस्तेमाल करते हैं नमक की तरह,
आंसुओं का नमकीन होना गुनाह है।
दुश्मनी हो जाती है मुफ्त में सैंकड़ो से,
इंसान का बेहतरीन होना गुनाह है।



ब्रजेश रंजन तिवारी
ले.प.

हिन्दी का महत्व

तराना है, फसाना है, अफसाना है, हिन्दी दिवस मनाना है।
देखो आया 14 सितम्बर, हिन्दी–हिन्दी गाना है।
दीप प्रज्वलीत कर हिन्दी दिवस का आगाज करेंगे।
देखो आया 14 सितम्बर, आज से हिन्दी दिवस का आगाज करेंगे।
दो चार भाषण अधिकारी देंगे, दो चार भाषण कर्मचारी देंगे।
फिर कचौरी, समोसा और रसगुल्ला खाकर, हिन्दी दिवस का शुभारंभ करेंगे।
देखो आया 14 सितम्बर, आज से हिन्दी दिवस का आगाज करेंगे।
आज से पूरे भारत में, हिन्दी का तराना करेंगे। कल से प्रतियोगिताओं का दौर चलेगे।
एक सप्ताह बाद हिन्दी दिवस का समापन समारोह करेंगे।
फिर एक बार कचौरी–समोसा, रसगुल्ला खाकर धुम करेंगे।
अधिकारी कर्मचारी फिर से अपने धुन में मगसुल रहेंगे।
ना हिन्दी होगा ना हिन्दी का फिर कोई महत्व होगा।
आओ आज हिन्दी दिवस पर, यह प्रतिज्ञा हम लें।
हर काम हिन्दी में करेंगे, हिन्दी में बोल चाल करेंगे।
हिन्दी दिवस हो या ना हो, भले ही कचौरी, समोसा ओर रसगुल्ला हो ना हो,
पर हिन्दी का सम्मान करेंगे।
देखो आया हिन्दी दिवस, हिन्दी का उत्थान करेंगे।
देखो आया हिन्दी दिवस, हिन्दी का सम्मान करेंगे।
अब अन्त में एक बार फिर कहना चाहता हूँ कि एक राष्ट्र हो एक हो भाषा, एक ही पहचान हो।
बहुत हुआ, अब तय कर लो, हिन्दीमय हिन्दुस्तान हो।
वक्ताओं की ताकत है हिन्दी भाषा
लेखकों का अभिमान है हिन्दी भाषा।
भाषाओं के शीर्ष पर है बैठी,
मेरी प्यारी हिन्दी भाषा।
प्यार मोहब्बत भरा है जिसमें
जिससे जुड़ी हर आशा है,
मिसरी से भी मिठी है जो
जो हमारी हिन्दी भाषा है।
जय हिन्दी, जय भारत ।



अजित कुमार
(DEO)

शादी का पत्र

सी.टी. कॉलोनी, हिंगपूर
10 अगस्त 2019

आदरणीय भिंडी मौसी,
सादर नमक व चीनी।

हम सब यहाँ पके हुए हैं और आशा करती हूँ कि आप सब भी वहाँ पके हुए होंगे। मैंने इस बात को बताने के लिए यह पत्र लिखा है कि हमारी प्यारी–सी बैंगन दीदी इतनी बड़ी हो गई कि अब उनकी शादी होने वाली है। मैं शादी की कार्ड कुछ दिनों में भेज दुँगी।

दीदी का शादी उनकी पसंद के लड़के श्रीमान कड़वे करेले से हो रही है। वह जीरागंज के रहने वाले है और उनका आचरण बहुत ही अच्छा है परंतु उनकी छोटी बहन चटपटी चाट बिल्कुल ही उनकी विपरीत है। यह सब बातें तो होती रहेंगी, अब मुझे आप सबों से यह अनुरोध है कि कृपया दीदी का शादी में जरूर आए ताकि उनकी शादी तेलपूर्ण होके पक जाएं।

मैंने आपके आने की बहुत तैयारियाँ की है इसलिए ना मत कहना। आप शादी से एक–दो–दिन पहले ही आ जाना ताकि हम सब बहुत मजे कर सके और वैसे भी आपके घर दालचीनीपुर से यहाँ आने में ज्यादा समय नहीं लगता है। कृपया करके लाल आलु को भी लेते आना उससे मिले बहुत समय हो गया है।

आशा है कि आप शादी में अवश्य आएंगे।

आपकी प्रिय बहन बेटी,
चुलबुली चुकुन्दर।



लेखिका ... **हर्षिता सहाय**
सुपुत्री– **श्री संजीव कुमार**
(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी/ हाजीपुर)

कौन है दुश्मन

मेरे दायें दुश्मन, मेरे बायें दुश्मन;
हाय दुश्मन, हाय दुश्मन।

अपने दुश्मन, है पराये दुश्मन;
हाय दुश्मन, हाय दुश्मन।

जिससे बात होती है, वो है दुश्मन;
जिससे बात नहीं होती, वो भी दुश्मन।

जिससे मुलाकात नहीं होती, वो है दुश्मन;
जिससे मुलाकात होती है, वो भी दुश्मन।

जहाँ जाता हूँ, वहाँ है दुश्मन;
जहाँ रहता हूँ, वहाँ है दुश्मन

सारे जमाने से हो गया हूँ तंग
जैस जमाने से हो गई हो जंग।

फिर कभी मैं सोचता हूँ तन्हाई में
क्या उम्र गुजरेगी दुश्मनी की परछाई में!

फिर आईने में मुझे नजर आये है दुश्मन;
हाय दुश्मन, हाय दुश्मन।

मेरे ही अन्दर है सब समाये दुश्मन;
हाय दुश्मन, हाय दुश्मन।

मेरे अहंकार है दुश्मन, मेरा भरम है दुश्मन,
मेरी उम्मीद है दुश्मन, इसने ही सबको बनाये दुश्मन।

हाय दुश्मन, हाय दुश्मन।



श्याम कुमार
व. ले. प./प्रतिवेदन

तब

एक तौलिया से पूरा घर नहाता था,
दूध का नम्बर बारी–बारी आता था।
दादी एवं छोटी माँ के पास सोकर इठलाता था,
पिता जी से मार का डर, सबको सताता था।
बुआ के आने से माहौल शांत हो जाता था,
पूरी खीर से पूरा घर रविवार मनाता था।
बड़े भाई के कपड़े छोटे होने का इन्तजार रहता था,
स्कूल में बड़े की ताकत से छोटे रोब जमाता था।
बहन भाई के प्यार का सबको बड़ा नाता था,
धन का महत्व कभी सोंच न पाता था।
बड़े का बस्ता किताबें, साईकिल, खिलौने, पेंसिल,
स्लेट चप्पल सबसे मेरा नाता था।
मामा–मामी, नाना–नानी घर हक जताता था,
एक छोटी सी संदूक को अपनी जान से ज्यादा
प्यारी तिजोरी बताता था।

अब

तौलिया–दूध अलग हुआ
माँ तरसने लगी, पिता जी डरने लगे
बुआ से कट गये, खीर की जगह पिज्जा, बर्गर, मोमो आ गये।
कपड़े व्यक्तिगत होगये, भाईयों से भी दूर हो गये,
बहन की प्रेम की जगह, गर्लफ्रेन्ड आ गई
धन प्रमुख हो गया, अब सब नया चाहिए
नाना नानी औपचारिक हो गये
बटुए मे नोट हो गये
कई भाषायें तो सिख गये मगर संस्कार भूल गये।
बहुत पाया पर कुछ खो गये,
रिश्ते के अर्थ बदल गये।
हम जीते तो लगते है,
पर एहसास व संदवेदनशील हो गये
कृपया सोंचे कहाँ थे, कहाँ पहुँच गये।



–राम बाबू
प्र0 कुशवाहा व.म.ले.प.अ/सम

किस पर गर्व करेगी पीढ़ियां?

पावन धरा की उपज हम, इसको ही उजाड़ चले,
किस पर गर्व करेगी पीढ़ियां, जिसको हम बर्बाद कर चले?

पुरखों की सम्मिलित धरोहर को हम, विकसित होकर भी न संभाल सके,
फुर्सत का रोना रोकर, जिम्मेवारी से भाग चले,
किस पर गर्व करेगी पीढ़ियां, जिसको हम बर्बाद कर चले?

अबाध उपभोगों की लड़ी बढ़ाकर, कम आय का रोना रोते हैं,
शांतिप्रिय जिंदगी छोड़, बेचैनी की ओर दौड़ चले,
किस पर गर्व करेगी पीढ़ियां, जिसको हम बर्बाद कर चले?

अपनी करनी से हम भविष्य को और गुमराह बना चले,
अंधाधुंध धन संचय में भाईचारा को नकार चले,
किस पर गर्व करेगी पीढ़ियां, जिसको हम बर्बाद कर चले?

मानवता का कोई भाव नहीं, उसे हम अपवाद बना चले,
और अविश्वास की अट्टालिका पर, सब रिश्तों को टांग चले,
किस पर गर्व करेगी पीढ़ियां, जिसको हम बर्बाद कर चले?

प्रकृति को निचोड़ कर, सतत विकास को लात मार चले,
हवा में जहर घोलकर, प्रदूषण की सीमा पार चले
किस पर गर्व करेगी पीढ़ियां, जिसको हम बर्बाद कर चले?

धर्म को समझे बिना, आडम्बर का चोला डाल चले,
वास्तविक धर्म–कर्म को भूल हम, आभासी धर्म में लीन हो चले
किस पर गर्व करेगी पीढियां, जिसको हम बर्बाद कर चले?

है अपार शक्ति मानव में, अपने को सुधार ले,
भेड़चाल को छोड़, मानवता की राह पकड़ ले,
दक्ष नाविक बन तू डूबती नैया को संभाल ले,
जिस पर गर्व करेगी पीढ़ियां, वैसी सुधरी चाल चले।



धर्मेन्द्र कुमार
स.ले.प.अधि./प्रतिवेदन

इम्तिहान

मेरे पापा कहते मुझ से, गधा है तू बड़ा,
ये सुनकर मैं जोड़ लगाकर मेहनत करता खूब कड़ा।
दिन–रात, सुबह–शाम मन लगाकर मैं पढ़ा,
फिर भी नामुराद नंबर मेरा नहीं बढ़ा।

भूगोल में यह प्रश्न आया
गोल कैसे यह धरा?
मैंने झट से उत्तर लिख दिया
यह घड़ा गोल है, पुरी–कचौड़ी, गुलाब जामुन भी गोल है,
वैसे ही हमारी प्यारी
धरती भी गोल मटोल है।

झूम उठे मास्टर जी,
इस अनोखे ज्ञान से

हमारी लेखनी भी गोल है,
गोल है दवात
नंबर भी तुम्हारा गोल है।

इसलिए हर रात को
एक मच्छर है कहता कान में,
इस बार तुम बच्चू
संभलकर बैठना इम्तिहान में।



प्रशांत प्रखर
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

चार चने (कविता)

चिड़िया लाई चार चने,
दाल बने फिर चार चने।
चिड़िया है मेहनती बड़ी
करती कुछ हर एक घड़ी
पीसे दाल, बना बेसन,
चिड़िया खुश थी, मन ही मन।
फिर सोचा–''क्या और करूँ''?
''बेसन को किस जगह धरूँ''

तभी चिड़ा आया घर में,
बेसन सूँघा क्षण भर में
बोला– ''ओ चिड़िया रानी''
मुझे पकौड़ी है खानी।
बेसन तुमने पीस लिया,
कितना अच्छा काम किया।
बने पकौड़ी छन–छन–छन
''खाएँ फिर हमदोनों जन!''

बनी पकौड़ी बैठे फिर,
खायी दोनों ने जी भर।
चिड़िया लाई चार चने लाई,
घर भर में हँसी–खुशी आई !



प्रेरित पाण्डेय
पिता–श्री राजीव कुमार पाण्डेय
सहा0 ले0 प0अ0/प्रशा0

पार्क

सुबह–सवेरे दौड़े भागे
युवा, बुढ़े या हो बच्चे
हो खिलाड़ी या साधु सन्तें
पार्क आने को आतुर होते।

बच्चे भागे, दौड़े खेले
झुंड बना मस्ती में डोले,
हंसी–ठहाके मन की बातें
जोर–जोर आपस में बोले।

बड़े बूढ़े भी खूब टहलते,
बहा–पसीना तेज कदम चलते।
कोई वर्जीश तो कोई करें योग
बहुत तो झाड़ी के नीचे
अनुलोम–विलोम का करें प्रयोग।

कई तो परिवार सहित है आते
चादर बिछा मैदान में बैठते
मिल–जुल कर खूब गप लड़ाते
जैसे ये पिकनिक पर आतें

कभी कभी तो शिविर भी लगते,
प्रायोजित कार्यक्रम भी चलते।
माईक चटाई बैनर भी टंगते
धवल–सफेद नये वस्त्रों में,
प्रशिक्षक ध्यान–योग सिखाते।

कहने को तो पार्क–तालाब में
मछली–हंस दोनों हैं रहते
आगुन्तकों का स्वागत करने
हंस सुबह मैदान में आते।

मछली भी पीछे कहाँ रहती,
झुंड बना के एक किनारे
जोर–जोर आवाज लगाती।
मानो स्वागत गान है गाती।
सैर सपाटे करने वाले
बुढ़े बच्चें और महिलाएँ
रोटी दाना घर से लाते,
बड़े प्यारे इन दोनों को
बारी–बारी खूब खिलातें।

बीच पार्क में बीर कुंवर की ऊँची प्रतिमा।
उठी तलवार, चौडी पैशानी, विराट महिमा
देश, प्रेम और बलिदानी का याद दिलाए
है राष्ट्र सर्वोपरि का संदेश सुनाए।

पार्क की फैली हरियाली
हरे पेड़ों की डाली–डाली,
मैदानों का कोना–कोना
खिले फूल और खग की टोली।

रोज सवेरे मिलकर बोले
मेरे इस छोटे आंगन में
कल सवेरे फिर से आना
तन–मन को चमका के जाना।



राशि भूषण
व0ले0प0अ0



मैं मच्छर हूँ।



ईश्वर सर्वव्यापी हैं बस वे नजर नहीं आते।
परंतु मैं सर्वव्यापी तो हूँ ही सब जगह नजर भी आता हूँ,
इसलिए ईश्वर की रचना होकर भी उनसे भी बाजी मार जाता हूँ।
कुछ लोग मेरे सर्वव्यापी होने को चुनौती देते है,
वे कहते हैं कि 'बर्लिन' में मच्छर नहीं पाए जाते।
उनसे मैं बस इतना कहना चाहता हूँ
कि वैसे तो ईश्वर भी तो नास्तिकों के हृदय में नहीं बसते और
वैसे भी यदि बर्लिन के लोग सफाई से थोड़ी भी दूरी बना लें
तो मुझे वहाँ पहुँचने से भी कोई नहीं रोक सकेगा।
मुझे नष्ट भी नहीं किया जा सकता।
वैज्ञानिकों का कहना है कि परमाण युद्ध के बाद भी मै
अस्तित्व में रहूंगा ही।
मैं ईश्वर में आस्था रखने वाले लोगों के लिए वरदान से कम नहीं हूँ।
अपने गौर किया होगा कि मैं ब्रह्ममुहुर्त में सबसे अधिक सक्रिय रहता हूँ
और उनके कान में गुनागुनाकर जगने और भजन करने को प्रेरित भी करता हूँ।
हर चीज मे गलती ढूढ़ने वाले 'लेखापरीक्षक' प्रकृति के लोग मुझे रक्त पिपासु तुच्छ जीव जैसी उपाधियों से अलंकृत करते हैं, परंतु वे भूल जाते हैं कि आजकल के गलत खान–पान से लोगों के शरीर में अशुद्ध रक्त की मात्राा कितनी बढ़ गई है, मैं तो बस उसकी मात्रा थोड़ा कम कर देता हूँ ताकि वे स्वस्थ्य रहें। जो लोग आज के दौर में भी शुद्ध खाना खा पाते हैं वे निश्चय ही रहे है, क्योंकि आर्गेनिक फल,सब्जी, तेल आदि के चोंचले साधारण आदमी के बस की बात नहीं और यदि ये है तो निश्चय ही वे सामान्य से अधिक खून शरीर में बना लेते होंगे। इस दशा में यदि मैंने उनका थोड़ा अतिरिक्त खून चूस लिया तो उनके स्वास्थ्य में वृद्धि ही होगी। अब तो आप जान गए होंगे कि मैं ईश्वर की भाँति ही अनश्वर, सर्वव्यापी और परोपकार करने वाला प्राणी हूँ। तो अगली बार यदि मैं खून चूसने आपके शरीर पर बैठूँ तो इन बातों को अवश्य याद रखिएगा।



प्रशांत प्रखर
स.ले.प.अधिकारी

कवि जी

मैं एक कवि हूँ। मेरी कल्पना का दायरा बहुत बड़ा है। कहते भी हैं 'जहाँ न जाए रवि वहाँ जाए कवि। यहाँ यह जरूर जान लीजिए कि मैं सिर्फ कलम का धनी हूँ, 'धन' मुझसे कोसों दूर है।

मेरी एक पत्नी भी है जिसमें ऐसे सभी गुण है कि मैं उसपर कविता कर सकूँ। वो मेरी रचनाओं की विषयवस्तु भी है और मेरी श्रोता भी। मैं अन्य कवियों सा तकनीकी रूप से दक्ष नहीं हूँ। मैंने अपनी एक पुस्तिका अपनी संचित मुद्रा खर्च करके छपवायी भी, परंतु उसकी कुछ ही प्रतियां बिकी उसके बाद बिकी नही। कुछ दिनों बाद मैंने कुछ जुगाड़ करके एक स्मार्टफोन खरीदा और सोशल मीडिया से होकर वही रचनाएँ मुझ तक पहुँची। अब मुझे समझ आया कि मेरी पुस्तिका की बाकी प्रतियां क्यों नहीं बिकी। मुझे सुख मिश्रित दु:ख हुआ।

फिर किसी ने डिजिटल 'प्लेटफॉर्म' पर रचनाएँ डालने की सलाह दी, बताया कि ऐसे तुम्हारी रचनाएँ कोई फ्री में नहीं पढ़ पाएगा। मैंने पुन: रजिस्ट्रेशन करवाकर रचनाएँ डाली लेकिन फिर नतीजा वही 'ढ़ाक के तीन पात'।

खैर मैंने हिम्मत नहीं हारी और फिर से रचनाओं में पिल पड़ा।

उस दिन मैंने कई रचनाएँ जमा कर ली थी, परंतु अभी तक कोई श्रोता नहीं मिला था कि तभी श्रीमती जी अपने लट संभालते हुए, ललाट से पसीना पोंछते हुए चाय का कप लेकर आई तो मुझे मुँहमांगी मुराद मिल गई। तलब भी लग रही थी और मुझे श्रोता भी मिल गया था। चाय फीकी थी, श्रीमती जी ने कहा ''चीनी खत्म हो गई है और सारी जमा पूँजी भी, अभी तक मैं घर कैसे चला रहीं हूँ, मैं ही जानती हूँ। काम करके जितना पैसा आता है उसी से घर चलता है।''

लेकिन श्रीमती जी ने कभी मुझे कुछ नहीं कहा। मेरी कमाई तो आप जानते ही हैं। मैंने उसकी बात पर सोचने का नाटक किया फिर कहा ''अरे तुम पास बैठो। दो मीठे बोल बोल दो, चाय तो वैसे ही मीठी लगने लगेगी। रही बात पैसे की तो तुम तो खुद लक्ष्मी हो। आओ तम्हें कुछ सुना कर तुम्हारा मनोरंजन करूँ।''

फिर मैंने एक घंटे से भी ज्यादा उसे अपनी रचनाएँ सुनाई। अंत में वो बोली– ''रचनाएँ तो अच्छी है लेकिन सुनकर पेट तो भरेगा नहीं, राशन का जुगाड़ करो।'' मैंने कहा –''अरे किसी से मांग लो, बाद में चुका देंगे।'' तो बोली–'' तुम ही क्यों नहीं जाते।''

''मुझे देखकर तो सब भाग खड़े होते हैं कि कहीं मैं अपनी रचनाएँ न सुनाने लग जाऊं और दूसरी बात कि यदि मैं सब से भाई चारा जोडूँ तो सब तुम्हें भाभी कहकर ठिठोली करेंगे और तुम तो जानती हो कि यह मेरे कवि हृदय को सहन नहीं होगा। इसलिए अच्छा है कि तुम ही सबसे बहनपा जोड़ो।'' उसने फिर कुछ नहीं कहा। तभी दरवाजे पर दस्तक हुई मैंने उसे कहा– ''देख लो, कोई तकाजे वाला हुआ तो बोल देना मैं घर पर नहीं हूँ। ''

वो गई और मुस्कुराते हुए वापस आई कहा– ''डाकिया था, ये दे गया है।'' मैंने देखा यह तो कवि–प्रदर्शनी का निमंत्रण पत्र था। मैं खुश हो गया, मेरे आँखों के सामने समोसे, कचौड़ी, मिठाईयाँ और पकवानों की एक झलक आकर चली गई। फकीरी में गुजारा करते करते इन चीजों का स्वाद तो भूल ही गया था।

प्रर्दशनी वाले दिन मैंने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहनकर टेम्पो से नियत जगह पर चल दिया। वहाँ का नजारा देखा तो दंग रह गया। चींटी के चलने की जगह नहीं थी। खैर किसी तरह वहाँ एक टूटे हुए कुर्सी पर कब्जा, जमाया और सोचने लगा कि प्रदेश में इतने सारे 'कवि' हैं, नहीं नहीं ये तो गरीबों या बेरोजगारों की फौज है, जो एक समय का खाना मिलने की आस से यहाँ पहुँच चुके थे।

अब कविता पाठ की बारी थी। जैसे ही मंच से घोषणा हुई कि अब कविता पाठ आरंभ होगा कि मंच पर बहुत सारे बेरोजगार पहुँच गए और मंच टूटते–टूटते बचा। उन्हें आशा थी की किसी जुगाड़ से प्रथम से प्रोत्साहन के बीच कोई भी पुरस्कार मिल जाए तो कुछ दिन कट जाए। प्रथम पुरस्कार में प्रशस्ति –पत्र, शॉल, मोमेन्टो और पाँच हजार की रकम थी, जो मैंने काफी समय से एक साथ नहीं देखे थे। प्रोत्साहन पुरस्कार पाँच सौ रूपए का था।

मुझे विश्वास था कि मुझे प्रथम पुरस्कार अवश्य मिलेगा आयोजक बिना निमंत्रण–पत्र वाले को जाने को कह रहें थे और कार्यक्रम चलने लगा था। बहुत सारे कवियों के बाद मेरी बारी आई। मेरी रचनाओं को तालियाँ तो काफी मिली पर पुरस्कार के रूप में पाँच सौ रूपये का प्रोत्साहन पुरस्कार ही मिला जो कि सभी निमंत्रित कवियों को मिला था। प्रथम से तृतीय पुरस्कार में सिफारिश का जोर रहा क्योंकि तीनों पुरस्कार पाने वाले नकलची कवि थे मौलिक नहीं। प्रोत्साहन पुरस्कार लेते समय आयोजक मुझे एसे देख रहे थे जैसे मैं दुनिया का सबसे दीन–हीन और तुच्छा व्यक्ति रहा हूँ। भला हो प्रायोजकों का कि आज के दौर में भी किसी स्वार्थ से ही सही, कवियों का कुछ तो भला होता है।

मैं पाँच सौ रूपए लेकर सोच रहा था कि कुछ राशन तो आ ही जाएगा कि इतने ही देर में मेरे एक मित्र का फोन आया ''कहाँ हो यार मैं बड़ी मुसीबत में हूँ। पत्नी अस्पताल में मरने के कगार पर है मेरे पास दवाईयों के पैसे भी नहीं है।''

उसे पता था कि मैं कवि प्रदर्शनी में गया हूँ और अच्छा लिखता हूँ तो कुछ पैसे मिले ही होंगे। एक तो मेरा कवि हृदय द्रवित हो उठा और दूसरे इज्जत की भी बात आ गई। अब क्या था मैंने उसे बुलाया और बिना किसी पूछताछ के पाँच सौ रूपए उसके हाथ पर रख दिए और भारी मन से घर चला आया। पत्नी से कहा 'फिकी चाय मिलेगी' उसने कहा 'हाँ' और मेरा चेहरा देखकर उसने पूछा 'किसी दोस्त का फोन आया था क्या?''

वो सब समझ चुकी थी।



प्रशांत प्रखर
स.ले.प.अधि./प्रतिवेदन

शहीद की व्यथा

कैसा खौफनाक मंजर है,
चारो और फैला रक्त का समंदर है।
कोई इधर गिरा, कोई उधर गिरा,
टुकड़ो में बिखरा, इंसानों का शव पड़ा।

घर से आया था, दो रोटी का जुगाड़ में,
कई सारी खुशियों हासिल करने के इंतजार में
बीबी–बच्चों के प्यार के बंधन को तोड़कर
बेबस, बीमार माँ–बाप को रोता छोड़कर
आंखों में कई हसीन सपने सजाकर,
जल्द ही वापस आऊँगा, ये उम्मीद लगाकर

क्या पता था कि ऐसा भी मुकाम आएगा,
मौत का कोई ऐसा भयावह पैगाम लाएगा।
एक ही झटके में सब कुछ खत्म हो जाएगा,
सारी उम्मीद और सपना भष्म हो जाएगा।

क्या बिगाड़ा था, मैंने ऐ साथियों तेरा,
मैने सिर्फ कर्तव्य निर्वहन किया, ये तो फर्ज था मेरा।
अब कौन सँभालेगा मेरे अभागे बच्चों को,
अबोध असहाय, अनजान मन के सच्चों को।

बीमार माँ–बाप की बुढ़ी आँखें राह ताकती होगी,
किस पथ से उनका सपुत आएगा, ये जाँचती होगी।
कौन बताएगा उनको, उनका पुत्र माँ भारती के गोद में सो गया,
जो कभी उनका लाल था, आज माँ भारती का हो गया।

अब उनके जीवन का मजबुत सहारा छूट गया,
लाठी उनके बुढ़ापे का क्षण भर में ही टूट गया।
कौन अब इनकी जीर्ण–शीर्ण काया को संभालेगा,
उनके टूटे हुए पतवार का नैया पार लगाएगा।

सदा चहकते रहने वाली, उस देवी पर पर क्या बीती होगी,
सफेद कपड़ो का लिबास में, डरी सहमी सिमटी होगी।
उसके आँसु तो, नयनो में सुख गए होंगे,
बच्चों को देखकर शायद बहना भूल गए लोग।

पत्थर की मूरत जैसी, जम सी गई होगी वो,
चंचल, चपला बिजली, गुम सी गई होगी वो।

विनती है, मेरी तुमसे ऐ उपर वाले,
कोई भटके हुए, इन काफिरों को संभाले।
काश इनको इतना सा ज्ञान हो जाए,
अपने बहुमुल्य जीवन का अभिमान हो जाए।
फिर कोई अपने जीवन का जंग न हारेगा,
किसी अबोध बच्चे को कोई अनाथ नहीं पुकारेगा।

घर की लक्ष्मी की खुशियाँ कभी कम न होगी,
किसी लाचार माँ–बाप को अपने सहारे का गम न होगी।

हर घर में खुशियो की बरसात होगी,
होली, दीवाली, और ईद हर रात होगी।

उपरोक्त कविता पुलवामा में हमारे सैनिको के बलिदान के उपर लिखित है। हमारे वीर सैनिक अपने देशवासियों के रक्षा के लिए हर विपरीट परिस्थिति में डटे रहते है, ओर अपना सर्वश्रेष्ठ बलिदान दे देते है। नाज है, ऐसे वीर महापुरूषों पर।
जय हिंद !



सुमित कुमार
क.ह.अ.

कविता

जब जब कागज पर लिखा, मैंने 'माँ' का नाम
कलम अदब से बोल उठी, हो गये चारो धाम...!!

मंजिल मेरे कदमों से अभी दूर बहुत है,
मगर तसल्ली ये है कि कदम मेरे साथ है...!!

आसमां में मत ढूँढ़ अपने सपनों को
सपनों के लिए जीये तो जीने का क्या मजा
जीने के लिए कुछ कमी भी तो जरूरी है...!!

हारे हुए की सलाह
जीते हुए का अनुभव
और स्वयं की बुद्धि
इंसान को कभी भी हारने नहीं देते है...!!

उलझोगे नहीं तो सुलझोगे केसे,
बिखरोगो नहीं तो निखरोगे कैसे...!!

अंदाजे से ना नापिये किसी की हस्ती को,
ठहरे हुए दरिया अक्सर गहरे हुआ करते है... !!

असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो,
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम
संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम
कुछ किये बिना ही जय–जयकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती ... !!

आजमाओगे तो हर कोई गलत है,
और समझोगे तो हर कोई अपनी जगह सही है...!!

जब आप खुद को तराशते है,
तब दुनिया आपको तलाशती है।

अगर आप इंसान की तलाश कर रहे हैं
जो आपकी जिन्दगी बदलेगा, तो आईने में देख लें...!!!
आपको अपना जवाब मिल जायेगा !



पंकज कुमार सिंह
वरिष्ठ लेखा परीक्षक

पोंगा पंडित

एक थे दुक्खन शास्त्री। गोरा रंग, मझोला कद और दिखने में विद्वान प्रतीत होते थे। पंडित न थे लेकिन संस्कृति रक्षक पंडित कहलाना बहुत पसंद करते थे। पहनते शर्ट–पैन्ट ही थे लेकिन उपदेश देने में धोती कुर्ता वालों को भी फेल करते थे। तत्सम शब्दों का अधिक प्रयोग करते थे, भारतीय पंचांग को अंग्रेजी कैलेंडर पर तरजीह देते थे। पाप–पुण्य, धर्म–अधर्म पर विशेष विचार रखते थे। सार्वजनिक जीवन में शाकाहारी प्रतीत होते थे परंतु दुनिया से नजरें बचाकर मांसाहारी तलब दूर कर लेते थे।

एक बार एक गरीब आदमी उनसे कुछ सहायता मांगने गया। उसने याचना की ''शास्त्री जी, कुछ रूपए होंगे। मैं बाद में आपके यहाँ घर के काम–काज कर के चुका दुंगा।''

शास्त्री जी – ''वैसे तो ठीक है पर एक तो मेरे यहाँ मेरी पत्नी सारा काम कर ही लेती है और दूसरी बात यह अगर तुम नहीं चुका पाए तो अगले जन्म में तुम्हें मेरे यहाँ बैल के रूप में मेरे खेत जोतकर सारा कर्ज चुकाना होगा इसलिए बेहतर है कि तुम मुझ से रूपए न लो।''

शास्त्री जी को शहर के बड़े रईस के यहाँ से उसके बच्चे के जन्मदिन की पार्टी का न्योता आया। शास्त्री जी पहुँचे तो केक कट रहा था। भोजन के समय उनकी रईस से मुलाकात हो गई। शास्त्री जी ने पूछ ही लिया – 'जन्मदिन अंग्रेजी कैलेंडर के हिसाब से था या भारतीय पंचांग के हिसाब से?

रईस–''आजकल तो सभी आयोजन अंग्रेजी कैलेंडर के हिसाब से ही होते हैं।''

शास्त्री जी–''हमें विदेशी कैलेंडर का त्याग करना चाहिए।''

रईस– ''ठीक है यदि ऐसा है तो स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस या गांधी जयंती जैसे राष्ट्रीय पर्व की शुरूआत भारतीय पंचांग के हिसाब से किस दिन हुआ, ये बताने का कष्ट करें या इनमें से कोई एक। हमलोग तो 15 अगस्त 1947, 26 जनवरी 1950 ऐसे ही जानते हैं। इसकी तिथि यदि आपको याद हो तो बताएँ, मैं आपकी बात मान लुंगा।''

शास्त्री जी निरूत्तर हो गए।

शास्त्री जी के शब्दकोश में लौहपथगामिनी (रेलगाड़ी), लौह सूचिका पट्टिका (सिग्नल), लंब दंड गोल पिंड धड़पकड़ प्रतियोगिता (क्रिकेट) जैसे शब्द भरे पड़े थे। उन्हें यूँ ही संस्कृत से शास्त्री की डिग्री नहीं मिली थी। वैसे उनके जानने वाले यही समझते थे कि चोरी चकोरी से डिग्री ली होगी। वास्तविकता क्या थी ये तो शास्त्री जी ही जाने। एक बार शास्त्री जी का बनारस जाना हुआ। वैसे तो चाय पीने से सबको मना करते थें परन्तु स्वयं निजी तौर पर चाय पीते थे। सो पहुँच गए चाय की दुकान पर उनके कान में थोड़ी खुजली हुई तो चाय वाले लड़के को बोले– ''यदि उपलब्ध हो तो एक 'धुम्रपान दंडिका प्रज्वलन यंत्र' (माचिस की तिली) प्रदान करने का कष्ट करो।''

लड़के को समझ नहीं आया । शास्त्री जी को गर्वमिश्रित खुशी मिली। फिर किसी ने कहा कि माचिस की तीली दे दो। फिर शास्त्री जी बोले–''तनिक दुग्ध शर्करा मिश्रित श्यामल पेय (चाय) देना। ''

लड़का बोला ''यह सब गड़बड़ सड़बड़ यहाँ नहीं मिलेगा। '' परंतु मालिक नौजवान था और थोड़ा जानकार भी। उसने चाय देने को कहा। लड़के ने चाय दे दी। चाय थोड़ी स्ट्रांग थी, दूध की मात्रा भी कम थी। शास्त्री जी नाक–भौ सिकोड़कर बोले– '' पेय इतना श्यामल क्यों है तनिक उज्जवल पेय मिलाओ। ''

लड़का मुँह ताकने लगा। इतने में मालिक आगे बढ़ा और लड़के को बोला– ''इसमें तनिक पशुपुत्रों हेतु निर्मित उज्जवल पेय मिला दो।''

शास्त्री जी भड़क गए बोले ''मुझे जानवरों का खाना खिलाया जा रहा है?''

मालिक–''गरम मत होइए श्रीमान्। मैंने दूध ही मिलाने को कहा है। दूध तो जानवरों के बच्चे के लिए ही होता है न। ये अलग बात है कि मनुष्य उसे अपने प्रयोग में ले लेता है। दूसरी बात यदि आप धुम्रपान नहीं करते तो माचिस की तीली को 'अग्नि उत्पादक रसायन लेपित काष्ठ दंडिका' भी तो कह सकते थे।''

शास्त्री जी का पाला आज गुरू से पड़ा था। नहले पर दहला पड़ा था। अब शास्त्री जी पूरी तौर पर तो नही, पर थोड़े से सुधर गए थे। अब वे शुद्ध हिंदी ही बोलते, जब बोलते।



अमित कुमार
स.ले.प.अधि./प्रशासन

एकता में बल

एक गाँव में दो भाई रहते थें गोपी तथा मुरली। दोनो बड़े ही नटखट थे। दोनो आपस में लड़ते रहते थे। स्कूल में भी झगड़ा करते, घर पर भी, खेलते–खेलते भी तथा सोने से पहले भी। माता–पिता के साथ ही साथ टोले मुहल्ले वाले भी काफी परेशान थे। शिक्षक समझाकर हार गए थे, माता–पिता डाँट–डपट कर । किसी के बातों का उन पर रत्ती भर भी असर नहीं होता था।

दुर्गा पूजा का त्योहार आया। दोनो भाई माता–पिता के साथ मेला देखने जा रहे थे। रास्ते में एक बहुत बड़े वृक्ष पर बंदरों का झूंड रहता था। पिता जी ने बंदरों को खाने के लिए कुछ केले दिए। अचानक बंदरों के झूंड में भगदड़ मच गई। सब आपस में केले के लिए झगड़ने लगे। इसी बीच बड़े तथा शक्तिशाली बंदर केले लेकर भाग खड़े हुए तथा कमजोर बंदर मुँह ताकते रह गए।

पिताजी ने समझाया–''यदि ये आपस में मिलकर रहते तो काई भी बंदर भूखा नहीं रहता सभी को कुछ न कुछ तो खाने को जरूर मिलता लेकिन आपस में लड़ने के कारण बलशाली बंदर ने कमजोर बंदरों से उसका हक छीन लिया।''

वहीं उसी वृक्ष के नीचे गोपी तथा मुरली ने देखा कि चींटियो का एक दल मिलकर एक बड़े कीड़े को खींच कर ले जा रही है तथा कीड़ा बड़ा होने के बावजूद लाचार है। दोनो भाईयों ने चींटियों की साहस एवं एकता को देखा। दोनो आश्चर्य चकित थे। उनकी आँखों में अचरज था। वे मेला को भूल गए थे।

पिता जी ने कहा – ''छोटी चींटिया तो मिलकर बलवान हो गई है।''

दोनो एक साथ बोले'' –हाँ पिताजी! ये एक साथ मिलकर कीड़े को ले जा रही है।''

पिता जी ने पूछा– अगर ये चींटिया आपस में लड़ने लगे तब क्या होगा?

दोनों भाई एक साथ– ''वही बंदर वाला हाल हो जाएगा'' किसी को भोजन मिलेगा, कोई भूखा रह जाएगा। ''

पिताजी– ''जो मेरे बच्चों तुम क्यों इस बंदरों जैसी हरकत करते हो? यदि आपस में लड़ोगे तो काई तीसरा इसका फायदा अवश्य उठाएगा तथा तुमदोनों को हमेशा नुकसान होगा।''

तब गोपी तथा मुरली को ये बातें समझ में आ गई थी। दोनो के आँखों से आँसू बह रहे थे। दोनो अपने पिता की ओर बढ़े। पिताजी ने दोनो को अपने हृदय से लगा लिया।



कुन्दन कुमार
स.ले.प.अधि./तदर्थ पु0म0रे0

हिन्दी दिवस

हिन्दी दिवस आज है।
गौरवान्वित हूँ, इस पर हमें नाज है।

यह सरल, सुबोध, मन भावन है।
यह गंगा, यमुना सी पावन है।
यह हमारी आन बान शान है।
यह हिन्दुस्तान की पहचान है।
उसकी मिठास दिल को छू जाती है।
यह सीधे दिल में उतर जाती है।
उसी की गहराई में उतरकर
'वेनीपुर' की लेखनी 'जादू की छड़ी' बन गई।
'रेणु' की कहानियाँ, लोगों की जुबान चढ़ गई।
दिनकर, निराला पंत दिल दिमाग पर छा गये।
प्रेमचंद तो मंच पर डंका बजा गए।
बस एक काम करना है।
यह हमारी संस्कृति का गहना है।
कोर्ट कचहरी, कार्यालयों में
इसका प्रयोग अनिवार्य होगा।
सही मायने में तभी
दिवस मनाने का सही कार्य होगा।
हिंदी लिखने और बोलने वाले को प्रोत्साहित करिए।
आइए इस भाषा की महिमा से अपने को सुसंस्कृत कीजिए

'धन्यवाद'



राहुल रंजन
ले.प. (आई.टी)

चुटकुला

एक विद्यालय निरीक्षक थे, मिजाज से बहुत ही कड़क। इनके सख्त रवैये एवं कठिन सवालों के कारण वे काफी मशहूर भी थे। जहाँ भी निरीक्षण हेतु जाते, मुश्किल से ही कोई विद्यार्थी इनके सवालों का जवाब दे पाता।

एक बार की बात है। निरीक्षक साहब निरीक्षण हेतु विद्यालय में गये। सारे शिक्षक पहले से ही भयभीत थे। वर्ग में जाने के बाद निरीक्षक साहब ने बच्चों से सवाल कियाा– ''अगर कोई हवाई जहाज अमेरिका से 10 :0 0 बजे 10 0 0 किमी/घंटा की रफ्तार से चला है, तो बताओ मेरी उम्र क्या है''।

सब हैरान थे। वर्ग के सबसे तेज बच्चों के साथ शिक्षक को भी समझ नहीं आ रहा था कि उत्तर क्या दें।

अंत में पीछे की बेंच से एक बच्चे ने हाथ उठाया।

निरीक्षक साहब बहुत खुश। सारे शिक्षक असमंजस में थे क्या जवाब देगा।

निरीक्षक साहब ने पूछा – ''बताओ, तुम्हे उत्तर पता है?''

बच्चे ने जवाब दिया–'हाँ'। आपकी उम्र 46 साल है।

निरीक्षक साहब ने कहा–''बिल्कुल सही जवाब।''

सब लोग चकित। फिर निरीक्षक साहब ने कहा–''अच्छा ये तो बताओ कि कैसे पता चला।''

बच्चे ने कहा– ''श्रीमान मेरा एक भाई है जो आधा पागल है और उसकी उम्र 23 साल है।''





राहुल रंजन
लेखापरीक्षक आईता

उन दिनों

उन दिनों, महफिलों में,
वो मुझे उन निगाहो से घूरा करते थे,
उन हसरतो को, उन चाहतो को,
वो उन अदाओं से पुरा करते थे !
उन हिरनी–चालो से, उन हसीन आँखों से, वो उनके दीवाने को लुटा करते थे।

खुबसूरत सिर्फ चाँद होता है,
परियां सिर्फ जन्नत में मिलती है,
खुशबुएँ सिर्फ फूलों में होती है,
मिठास सिर्फ कोयल में होती है,
वो उन बातों को, उन रातों में,
उन मुस्कानों से झूठा करते थे।

दोस्त

बेचैन हो उठता है दिल, पल भर भी
जब वो जुदा होता है।
दोस्ती में दोस्त ही रब, दोस्त ही सब,
दोस्त ही खुदा होता है।
लाख मनाते है हम उसे,
जब वो कभी खफा होता है।
पर दिल पे क्या गुजरती है, वही दोस्त जब बेवफा होता है।



श्याम कुमार
व.ले.प./प्रतिवेदन

सबसे बड़ा मूर्ख

कॉलेज टाईम में मैने अकबर बीरबल की एक कहानी सुनी थी जिसमें अकबर की आज्ञा लेकर बीरबल 'सबसे बड़ा मूर्ख' खोजने निकलता है और ऐसे दो लोगों को खोज भी लाता है जिनमें से एक गर्भवती घोड़ी पर सिर पर गठरी रखकर बैठा था ताकि घोड़ी पर गठरी का भार न पड़े और दूसरा अपनी पत्नी की दूसरी शादी पर खुशी के मारे दौड़ा जा रहा था। परंतु अंत में बीरबल अन्य महत्त्वपूर्ण काम छोड़कर ऐसे समय बर्बाद करने का दोषी ठहराकर अकबर को ही सबसे बड़ा मूर्ख साबित कर देता है। असल में बीरबल सफल नहीं हो पाया था इसलिए अकबर को ही मूर्ख ठहरा बैठा क्योंकि घोड़ी पर बैठे आदमी ने भी कुछ दिमाग तो लगाया और दूसरे कि आज के दौर में कौन ऐसा है जो पत्नी से पीड़ित नहीं है। हाँ, यदि आप ऐसे नहीं हैं तो दिल पर मत लिजिएगा। अपवाद तो सभी जगह होते हैं।

तो मेरे मन में आया कि क्यों न बीरबल की खोज को एक 'सफल अंजाम' दिया जाए। अब समस्या ये थी कि अकबर किसे बनाया जाए क्योंकि असफलता की सूरत में किसी को तो 'मूर्खराज' घोषित करना पड़ेगा। वैसे मैं असफल नहीं हो सकता क्योंकि मैं बुद्धिमान हूँ, फिर भी पहले मैंने अकबर की तलाश शुरू की। मुझे सफलता भी मिली। एक सज्जन थे जो रईस प्रवृत्ति के थे और बुद्धिमान भी परंतु मझसे कम बुद्धिमान। उनके यहाँ मेरा आना–जाना भी था। सभी उन्हें 'गुरूजी' कहते। शाम को मिलते ही मैंने उन्हें कहा– ''क्यों न 'सबसे बड़ा मूर्ख' खोजा जाए।'' उन्होने मुझे सिर से पैर तक देखा फिर ठठाकर हँस पड़े। गुरूजी बड़े विनोदी थे। सो मान भी गए।

मेरे दो बच्चे हैं–एक बेटा ओर एक बेटी। मेहमान आने पर मैं उन्हें भी आवभगत में लगाता था। एक दिन बेटे ने खिड़की से मेहमान को आते देखा तो बोला–''पापा, आप पहले ही खुद से पानी वगैरह रख लीजिए। बाद में न कहना कि मैंने नहीं किया।'' उसने कह दिया तो तय था कि अब वो कुछ नहीं करता, जिद्दी जो था।

हम सब मेहमानबाजी में लगे ही हुए थे कि बेटी ने कहा –''मेरे पैर दुख रहे हैं।'' पत्नी ने टालते हुए कहा–''अपने हाथों से दबा लो।'' थोड़ी देर में बेटी फिर आई, कहा–''पैर दबाते–दबाते हाथ दुखने लगे।'' मेहमान हँस पड़े। मुझे मूर्ख मिलने की संभावना नजर आई। अगले दिन गुरूजी से चर्चा करने पर वे बोले–''वह मूर्ख नहीं है, तुम्हारा बेटा दिमाग का तेज है लेकिन है कामचोर और बेटी ने सबका 'अटेंशन' पाने के लिए ही ऐसा किया। वैसे भी बच्चे मूर्ख नहीं मासूम होते हैं इसलिए इन्हें अपनी खोज से दूर रखो।''

बात मेरी समझ में आ गई पर समस्या जस की तस थी। एक दिन मुझे पता चला कि 'ढ़कला' गाँव के लोग मूर्ख होते हैं सो पहुँच गया वहाँ। वहाँ एक बुढ़े बाबा फटेहाल से थे। वे एक सामानों से भरा थैला लेकर कहीं जा रहे थे। मैंने उन्हें रोका और कहा–''बाबा आप यदि मुझे बता दें कि आपके थैले में क्या है तो दो हजार दूंगा और यदि ये भी बता दें कि कौन सा सामान कितनी मात्रा में है तो पाँच हजार दूंगा।''

बाबा की आँखें चमक उठी, शायद इतना पैसा उन्हें एक साथ मिलने की आस जग गई थी। बोले–''यदि थोड़ा हींट (इशारा) मिल जाता तो मैं सब बता देता। मुझे लगा की खोज पुरी हुई, सो मैंने उन्हें कहा –''चलिए मेरे साथ, मालिक पैसे देंगे।'' उन्हें बाईक पर बैठाकर मैं गुरूजी के पास पहुँचा। वे बोले–''एक तो ये बुढ़े हैं, इस उम्र में बुद्धि थोड़ी कम हो जाती है। दूसरे कि इन्होंने दिमाग तो लगाया ही

क्योंकि शायद इन्हें लगा हो कि ऐसा ही उत्तर दें जो तुम्हारे मन में हो। आखिर पैसे का सवाल था न।''

प्रयास असफल रहा। इसी बीच गुरूजी के पास एक टुटपुंजिया ठेकेदार पहुँचा, जो अपने मजदूरों के कामचोरी से बड़ा दुखी था। उसे 'मार्जिन मनी' ज्यादा चाहिए था इसलिए कम मजदूरों से ज्यादा काम करवाना चाहता था। गुरूजी ने समस्या सुनी। फिर उसे सलाह दी ''तुम सूरज को देर तक आसमान में रोकने की कोशिश करो। इसके लिए मजदूरों के आते ही छत पर चढ़ जाओ और एक हाथ सूरज की ओर दूसरे हाथ की मुट्ठी आसमान की ओर आँखें नीचे करके ये कोशिश करो। तुम देखोगे उस दिन सूरज देर से ढ़लेगा।''

ठेकेदार मसखरी नहीं समझ पाया, सच समझ बैठा। अगले दिन उसने ऐसा ही किया और जब थक गया तो उसे गुरूजी की बाते सच लगी। वो गुरूजी के लिए शाम को मिठाईयां लाया और गदगद होकर उन्हें कहा–''अब मैं रोज ऐसा ही करूंगा और मजदूरों से ज्यादा काम करवाऊंगा।'' गुरूजी खुश हुए। शाम को मिलने पर सारी बातें बताई, कहा–''क्या कहते हो?''

मुझे फिर लगा तलाश पूरी हुई। तभी सोचनीय मुद्रा में गुरूजी बोले–''ये मूर्ख तो है पर मूर्खराज नहीं कह सकते क्योंकि ये मौलिक मूर्ख प्रतीत नहीं होता, यह तो मेरी बात से मूर्ख बना।'' मायुस होकर तत्काल कोशिश रोककर अपनी दिनचर्या में लग गया।

दफ्तर में मेरे दो सहकर्मी टेम्पो से आये थे, उनमें से एक मुस्कुरा रहा था। कारण पूछने पर बताया कि साथ आ रहे दूसरे स्टाफ ड्राइवर के बगल में बैठे थे। ड्राईवर मोटा था और वो भी तंदुरस्त काया के थे। ड्राईवर ने उन्हें कहा ''आप पीछे चले जाएं।'' उन्होंने कहा–''नहीं मुझे आगे ही बैठना है यहाँ आराम रहता है, ज्यादा है तो तुम ही पीछे चले जाओ, नहीं तो उतर जाओ, मैं तो आगे ही जाऊंगा।'' मुझे फिर मुर्खराज की खोज पुरी होती लगी। शाम को गुरूजी से चर्चा करने पर वे बोले–''ये तो विनोदप्रिय व्यक्ति का काम भी हो सकता है। कहीं उसने सबको हँसाने के लिए तो ऐसा नहीं किया!'' स्पष्ट था खोज अभी जारी रखना था।

दफ्तर में मेरे सहकर्मी एक्जिक्युटिव मैनेजर से रीजनल मैनेजर तक बन चुके थे, पर मैं मामूली एक्जिक्युटिव ही था। मुझे प्रमोशन न मिलने का कारण समझ नहीं आता था। सहकर्मी न तो मेहनती थे, न ही तेज, पर पता नहीं कैसे प्रमोशन पा जाते थें।

घर आने पर पत्नी से चर्चा की तो उसने कुछ प्रसंग सुना दिए जो वो पड़ोसनों से सुनकर आयी थी। एक प्रसंग में बॉस सभी कर्मचारियों के साथ टूर पर जाता है। वहाँ कुछ कंकड़–पत्थर इकट्ठा करके एक हाथ में रखता है, दूसरे हाथ से दो–चार कंकड़ तालाब में फेंककर कर्मचारियों से पूछता है–''इस घटना का वर्णन करो, जो सबसे अच्छा वर्णन करेगा उसे ईनाम मिलेगा। ''ज्ञानी कर्मचारीगण ज्ञान देने लगे। फिजिक्स, केमेस्ट्री, इतिहास, भूगोल सभी का सहारा लिया गया, पर बॉस संतुष्ट न हुए। अंत में एक कामचोर और बेवकूफ टाईप के कर्मचारी की बारी आई। किसी को उससे आशा न थी। उसने कहा–''सर, मैं केवल इतना जानता हूँ कि जिसे आपने रख लिया वो बच गया और जिसे छोड़ (फेंक) दिया वो डूब गया।'' बॉस गद्गद् हो गए, उन्होंने उसे बाकी कर्मचारियों का का हेड बना दिया।

दूसरे प्रसंग में एक अति चापलूस कर्मचारी बॉस के पिता के मरने पर नजर नहीं आया। बॉस पर्यावरण प्रेमी थे। शवदाह गृह जाने पर पता चला कि 3 घंटे बाद नंबर आएगा बॉस के माथे पर बल पड़ने ही वाले थे कि दो नंबर का मुर्दा उठ बैठा और बोला–''मेरा नंबर इन्हें दे दो।'' फिर वो चापलूस कर्मचारी बोला–''माफ कीजिएगा हुजूर, मैं रात में मौत की खबर सुनकर वहाँ नहीं आ पाया क्योंकि मुझे यहाँ पहुँचने में तनिक देर होती तो आपको दो लाशों के बाद नंबर मिलता।'' बॉस ने उसे गले लगा लिया। उसकी काफी तरक्की हुई। ये प्रसंग काफी कॉमन सुनने में आती है, आपने भी सुनी होगी पर मैं इसे किंवदंती मानता हूँ और उपरवाले पर भरोसा रख कर मन लगाकर काम निपटाता हूँ।

खैर, मैंने पत्नी की सारी बातें सुनी फिर बोला–''नहीं–नहीं मैं एक बार तुम्हारे कहने पर चापलूसी करने गया था, नौकरी जाते–जाते बची थी, दोबारा न करूंगा।'' हुआ यूं था कि मेरे तत्कालीन बॉस की पत्नी का किसी बीमारी से देहांत हो गया था। शोकसभा में मैं भी पहुँचा। तभी मुझे याद आया कि कैसे मुहल्ले में एक व्यक्ति की माँ मर गई थी तो कल्लू ने कहा था – 'मत रोइए, आपकी माँ मेरी भी तो माँ हुई। मैं भी उन्हें आप जैसा ही प्यार करता था।' और बाद में कल्लू उस परिवार का सदस्य सा बन गया था।
वहाँ बॉस पत्नी की याद में उदास एकटक कहीं देख रहे थे तभी मैंने मौका देखकर चौका मारा–''बॉस!उदास न हों आपकी बीवी मेरी भी तो बीवी जैसी हुई, मैं भी उन्हें आप जैसा ही प्यार करता था बल्कि आपसे भी कहीं ज्यादा।''अब बॉस की आँखें कुछ सामान्य हुई और मुझे मेरी दाल गतती नजर आई आखिर में 'कल्लू' से भी दो कदम आगे निकल गया था।

मैं प्रमोशन की आस लिए बॉस की ज्वाइनिंग का इंतजार कर ही रहा था कि पियुन मुझे 'सस्पेंशन लेटर'दे गया था। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था। फिर मैंने एक चापलूस को समस्या बताई तो उसने किसी तरह मेरी नौकरी बचाई थी। वर्तमान में बहुत जिद करने पर पत्नी को फिर से चापलूस करने का आश्वासन दे दिया।

रात को मेरे बड़े साहब के बच्चे का बर्थ–डे था। मैं पहुँचा तो अभी केक ही कटा था, खाने में अभी समय था। सभी बैठे थे कि किसी की नजर टेबल पर रखे एक चित्र पर गई। देखकर लगा कि किसी बच्चे ने रंग पोत कर छोड़ दिया है। ये बर्थ–डे ब्वॉय की बनाई पेंटिंग थी। अब क्या था। सभी चापलूसी में लग गए। किसी ने कुछ कहा, किसी ने कुछ। किसी ने तो यहाँ तक कह दिया कि बच्चे ने चित्र में भगवान और भक्त का अन्योनाश्रय संबंध उकेरा है। अब मैं डर गया कि कोई और बाजी न मार जाए। मैंने कहा ''ये बातें नहीं हैं। इस चित्र में कोई हिंसक पशु शिकार के इरादे से आया है, लेकिन भयभीत हिरणी अपने बच्चों का छोड़कर ममतावश भाग नहीं पाई है और यह देखकर हिंसक पशु ने भी हिंसा की भावना का त्याग कर दिया है। वाह! क्या सोंच है। यह लड़का आगे चलकर चित्रकार बने या न बने, एक सच्चा और अच्छा इंसान जरूर बनेगा।''

बॉस की आँखों में चमक जरूर आई थी, परंतु आँखों से तय करना मुश्किल था क्योंकि मेरा पिछला अनुभव ठीक नहीं रहा था। अगले दिन दफ्तर में लंच के बाद मुझे एक मेल मिला। मेरा प्रमोशन हो गया था। मेरी आँखों में खुशी के आँसू आ गए। घर जाकर पत्नी को मिठाई के साथ यह समाचार सुनाया तो उसने पूछा–''तुम्हें यह आइडिया कहाँ से आया और पहले तुम ऐसा क्यों नहीं कर पाए?''

मैंने कहा–मैंने गुरूजी से ऐसी घटना सुनी थी।'' फिर पहले वाली चापलूसी की कहानी सुना दी। उसने वो घटना सुनकर सर पकड़ लिया और कहा– ''भला कोई किसी की बीवी के बारे में ऐसा कहता है! यदि ऐसा न करते और पहले ही दिमाग से काम लेते तो आज 'बड़े साहब' की जगह तुम होते। वाकई तुम ''दुनिया के 'सबसे बड़े मूर्ख' हो।'' मेरी तलाश पूरी हो गई थी। अब गुरूजी को जबरन 'मूर्खराज' की उपाधि देने की कतई जरूरत न थी।



प्रशांत प्रखर
स0ले0प0 अधिकारी तदर्थ
प्रशासन

अजादी का अमृत महोत्सव

महोत्सव है यह आजादी का,
महा पुरूषों की याद दिलाने का,
करता है यह देश नमन
उन शहादतों को
जिसने ना सोची खुदगर्जी,
कर दिया नयोछावर अपना सर्वश
बनाने को यह देश महान,
अनूठा उत्सव है यह
जिसे उत्सुक है
यह देश मनाने को,

आजादी की याद दिला रहा
आगे बढ़ने की सीख बतला रहा,
दिखा रहा पथ निर्माण इस देश का
बता रहा कि हर समा परचम लहराया,
यही भारत देश है अपना
जहाँ कण–कण में बहती है
देश भक्ति की भावना,
चाहते है लोग यहाँ
बने अपना देश महान हो।



मानसी सिन्हा
सुपुत्री– श्री नवीन कु0
व.ले.प.अ.

द्रौपदी चित्कार

असहाय नारी एक अबला खींची जाती दरबार में।
शायद कुछ आवाज ही कम है द्रौपदी के चित्कार में।।

मांग रहा अब न्याय हस्तिनापुर अभिमान के आहत में ।
चौसा के खेलों ने बदला प्रेम का रस कड़वाहट में।।
अभी नहीं लौटी है रौनक वीरों के तलवार में।
शायद कुछ आवाज ही कम है द्रौपदी के चित्कार में।।

हर एक सोचे सभागार में दोषी या दोषी कौन।
तेरा भी कर्तव्य है बनता सभा बीच जो बैठे मौन।।
नर संहार का बीज छुपा है इस अपमान की आड़ में।
शायद कुछ आवाज ही कम है द्रौपदी के चित्कार में ।।

एक से एक थे बली बलशाली, आँखें नीचे झुकी हुई ।
हाय विधाता भाग्य को कोसे, सांसे है सबकी रूकी हुई।।
क्या अब भी कुछ धर्म शेष है तेरे अत्याचार में ।
शायद कुछ आवाज ही कम है, द्रौपदी के चित्कार में।।

आँखें सबकी बन्द पड़ी विदुर सभा को छोड़ गए।
लज्जा है लाचार बनी, अब मर्यादा को तोड़ गए।।
अब अपमान क्या शेष बचा है नारी का संसार में।
शायद कुछ आवाज ही कम है द्रौपदी के चित्कार में।।

बीच सभा में खड़ी द्रौपदी मांग रही कुल की रक्षा।
क्यु चुप हो हे धर्म के रक्षक कहाँ गई तेरी शिक्षा।।
खीचों इसकी चिर दुशासन दासी स्वतंत्र कब हार में ।
शायद कुछ आवाज ही कम है द्रौपदी के चित्कार में।।

था अभिमान द्रौपद सुता को अपने पाण्डव के कुल बल में ।
शुन्य मूर्त वे आज हुए थे अपने कर्तव्य के आंचल में।।
चिर बढ़ाने लगे जो गिरिधर धर्म रूप अवतार में।
शायद कुछ आवाज ही कम है द्रौपदी के चित्कार में।।



अजय कुमार झा
स०ले०प०अ० (तदर्थ)

अभिमान

कुछ लोग जहां में आते है
अपनी कला दिखाते है,
अभिनय के कुछ पल जीकर
जाने फिर कहाँ खो जाते है।
जाने फिर कहाँ खो जाते है।

कुछ जीवन खोकर भी सबकुछ
सदियों तक यहाँ जीते है,
बापू, बोस और लता बनकर
अमृत रस बरसाते है।
अमृत रस बरसाते है।

कुछ जाने कौन गली से
अभिनय करके मौन सरीखे,
अँधियारे का जुगनू बनकर
अँधियारे में खो जाते है।
अँधियारे में खो जाते हैं।

पर जीवन है जीकर जाओ
ऐसा जीवन जिसपर नाज हो,
सदियों का तो पता नहीं
पर अभिनय पर अभिमान हो।
पर अभिनय पर अभिमान हो।



सुचित्रा झा
स0ले0प0अ0 (डीडीयू)

बाल कलाकार के कलम से



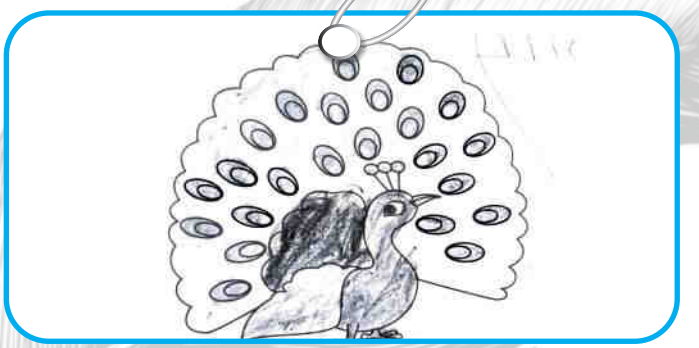












26-04-2010 06-08-2
06-08-2012 17-10-2016
17-10-2016 08.03.2017
08.03.2019 01.06.2020
01.06.2020 06.01.2021
06.01.2021


26-04-2010 06-08-2012
06-08-2012 17-10-2016
17-10-2016 08.03.2017
08.03.2019 01.06.2020
01.06.2020 06.01.2021
06.01.2021

हिंदी सप्ताह 2021



